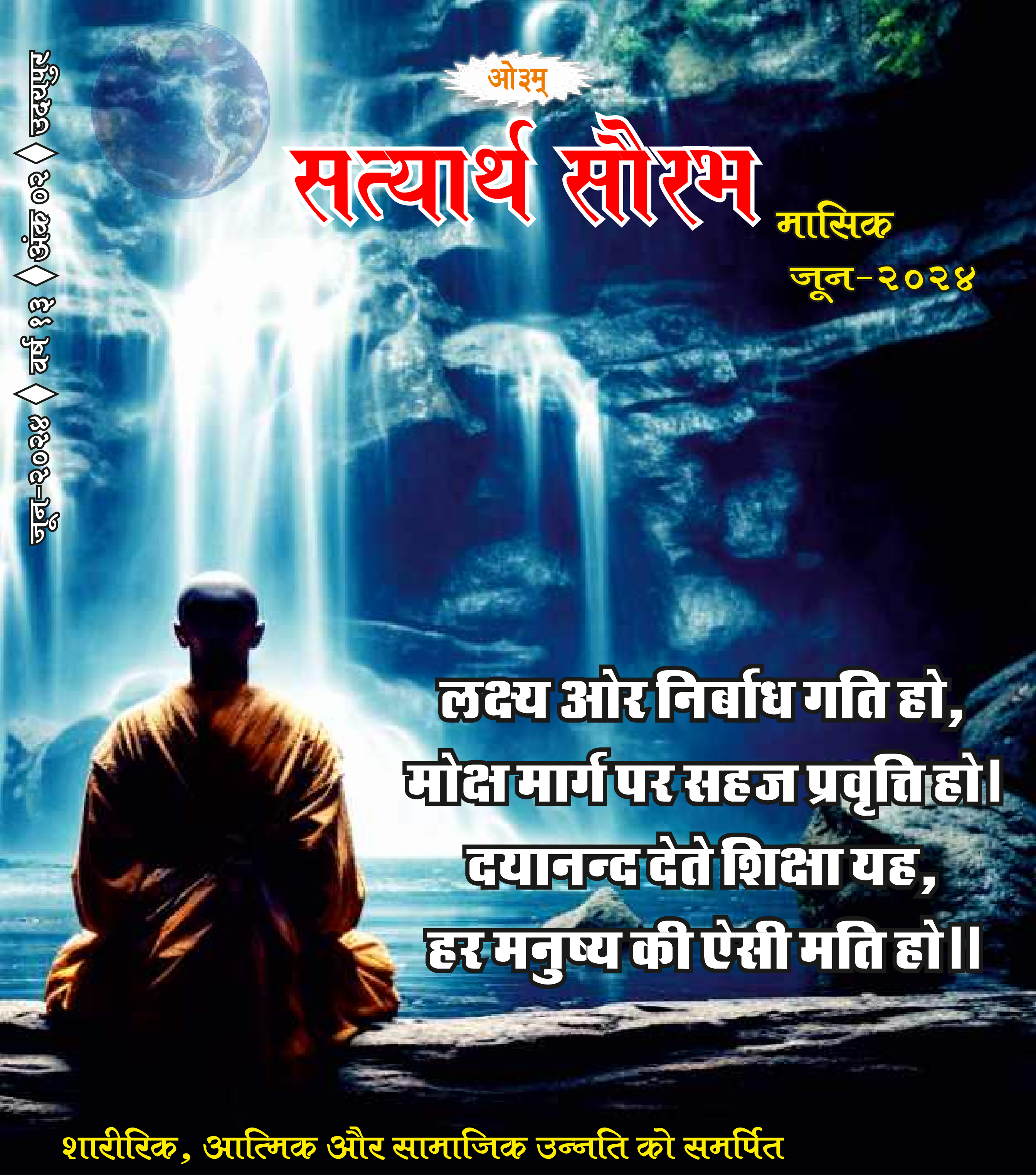

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०२४

जून-२०२४ ◊ वर्ष १३ ◊ अंक ०२ ◊ उदयपुर

लक्ष्य ओर निर्बाध गति हो,
मोक्ष मार्ग पर सहज प्रवृत्ति हो।
दयानन्द देते शिक्षा यह,
हर मनुष्य की ऐसी मति हो।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १५२

सफलता के 6 मूल मंत्र
1 ईमानदार बनना
2 मेहनत करना
3 मीठा बोलना
4 कृपा परम-पिता परमात्मा की
5 आशीर्वाद माता-पिता का
6 प्यार संसार का।
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
GARAM MASALA
गरम मसाला
SAMBHAR MASALA
साम्बर मसाला
CHANA MASALA
KITCHEN KING
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
KASHMIRI MIRCH
CHUNKY CHAT MASALA
RAJMAH MASALA
राजमा मसाला
SABZI MASALA
सब्जी मसाला
DEGGI MIRCH
PEACOCK
KASOORI METHI
PAV BHAJI MASALA
पाव भाजी मसाला
VEG BIRYANI MASALA
वैज बिरयानी मसाला
KARAHI PANEER MASALA
कढ़ाही पनीर मसाला
JAL JEERA MASALA
जल जीरा मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
ज्येष्ठ शुक्ल प्रथम
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

June - 2024

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०७

जानिये रामायण को

१७

समाचार २१

हलचल ३०

०४ वेद सुधा
०६ सत्यार्थ मित्र बनें
१० वेदों पर आक्षेप मूर्खता है
१३ आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष
२० दयानन्द के कारण आर्य जाति की उन्नति
२३ विश्वशान्ति की समस्या और समाधान
२६ स्वास्थ्य- उच्च रक्तदाब
२८ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १३ अंक -०२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

प्रार्थना का स्वरुप

ओ३म् विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।। - यजुर्वेद ३०/०३

यजुर्वेद के इस मंत्र का अर्थ है- हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह हम सबको प्राप्त कराइये।

यहाँ हम सबके कल्याण की प्रार्थना है, केवल स्वयं के लिए नहीं है। वेदों में जो ज्ञान है, वह संसार के सभी मानवमात्र के लिये है। वेदों के 'ओ३म्' का मन की श्रेष्ठता की ओर संकेत है। ओ३म् अर्थात् अ, उ, म्- अ, उर्ध्व मस्तिष्क है, उ, मध्य हृदय है और म्, अन्त नाभि। तीनों का सम्बन्ध हमारी स्वर तालिका से है, लेकिन तीनों में श्रेष्ठ मध्य या हृदय है। वही ओ३म् को उच्चारित करने के लिए वायु देता है। यह आदि ज्ञान अनुभव के उन क्षणों में मिला था, जब मनुष्य अनुभव शून्य था। उसकी निरन्तर सत्यता उसके शाश्वत होने का संकेत है जिस तरह सूर्य का उदय हुआ है या नहीं, यह बात कहकर बताई नहीं जाती है। प्रकाश और गर्मी स्वयं इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया है।

स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों में ईश्वरोपासना का स्वरूप सम्पूर्ण होता है। प्रार्थना है क्या? मनीषियों ने कहा है- इष्ट देव के सम्मुख अन्तरात्मा से सहज और सच्चे रूप से निकले उद्गार ही सच्ची प्रार्थना है, न कि रटे हुए वाक्य, श्लोक और मन्त्र। प्रार्थना अर्थात् अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर से सहायता की याचना करना। प्रार्थी भक्त का यह दृढ़ निश्चय है कि ईश्वर उसके सभी शुभ कर्मों में परम सहायक बने रहते हैं। उसे अपने कर्मों की सिद्धि में एक उसी का अनुभव होता है और विफलता में भी निराशा नहीं होती, इसलिए उत्साह कभी क्षीण नहीं होता, अपितु बढ़ता है-

हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा।
धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

अर्थात्- हे ईश्वर! दया के सागर प्रभो! आप की अपार कृपा से मैं नित्य जप, उपासना आदि कर्मों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र से शीघ्र सिद्धि पा सकूँ। आप हमारी कामना पूर्ण कीजिये।

अन्तर की अकुलाहट को प्रभु के समक्ष प्रकट कर देना ही तो प्रार्थना है, इसलिए प्रार्थना में शब्दों का नहीं, भाव का महत्व है। शब्द स्थूल जगत् में सम्पर्क का माध्यम है, परमात्मा से जुड़ना हो तो भाव चाहिये। समर्पण भाव में भक्त और भगवान एक हो जाते हैं। हम प्रार्थना अकसर कब करते हैं, जब विकट समस्या या दुःख घेर लेता है। संत कबीरदास कहते हैं-

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।।

जीवन में दो अवसर ऐसे होते हैं जब किसी भी नास्तिक या आस्तिक को ईश्वर या किसी अज्ञात परम शक्ति पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ता है। एक घनघोर दुःख की स्थिति में और दूसरा दुःख के बाद सुख के समय पर। ये दोनों अनुभवगम्य स्थितियाँ सबके जीवन में आती हैं।

एक किसान ने बहुत परिश्रम करके फसल पैदा की। अपनी लहलहाती खेती को देखकर वह खुशी से सोच रहा था- अब इस अनाज को बेचकर मैं अपनी बेटी की शादी करूँगा। अचानक ही स्वच्छ आकाश में बादल छाने

लगे और वर्षा के साथ-साथ ओले भी बरसने लगे, देखते ही देखते उसकी सारी फसल नष्ट हो गई। कोई तो शक्ति है, जो परोसी थाली को खाने के पहले ही खींच लेती है। हमारे मन में कुछ होता है और विधाता के कुछ और। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी कोई हाथ हमें बचा लेता है और तब हमारे मुँह से अचानक यह निकलता है कि मारने वाले से बचाने वाले के हाथ लम्बे होते हैं।

किसी जंगल में एक कबूतर और कबूतरी एक वृक्ष पर अपने घोसले में खुशी से प्रेमालाप कर रहे थे। अचानक

कबूतरी की नजर वृक्ष के नीचे खड़े एक शिकारी पर पड़ी, जो उनकी ओर निशाना लगा रहा था। यह देखकर कबूतर ने कहा- अरे मत घबरा, हमारे पास ऐसे पंख हैं कि आकाश में बहुत ऊपर उड़ जाएँगे, जहाँ इसका तीर भी नहीं पहुँच पाएगा। जैसे ही उसने ऊपर आकाश में देखा एक बाज उनके आस-पास मंडरा रहा था कि जैसे ही वे घोसले से बाहर निकलें, वह उन पर झपट कर उनका शिकार कर ले। नीचे ऊपर दोनों जगह मृत्यु को देखकर कबूतर और कबूतरी आँखें बन्द कर बैठ गए कि अब तो मृत्यु निश्चित ही है। जब थोड़ी देर तक कुछ नहीं हुआ तो उन्होंने आँखें खोलकर जो दृश्य देखा वह आश्चर्यजनक था, वहाँ बाज और शिकारी दोनों मरे पड़े थे। हुआ यह कि जब शिकारी निशाना लगा रहा था, तब एक सांप वहाँ से जा रहा था। शिकारी का ध्यान निशाने पर था, इसलिए नीचे से जाते हुए सांप पर उसका पैर पड़ गया और सांप ने उसे काट लिया। सांप के डसने से शिकारी का हाथ हिल गया और तीर का निशाना चूक कर उड़ते हुए बाज को लग गया। बाज मर गया और शिकारी भी। कबूतर और कबूतरी के दोनों संकट दूर हो गए। कोई शक्ति तो है जो संकट के क्षणों में रक्षा करती है।

प्रभु भक्ति से क्रोध, चिन्ता और बुढ़ापा भी दूर रहते हैं और विवेक, शान्ति और स्वास्थ्य निकट आकर रहने लगते हैं।

एक बार किसी भक्त को रास्ते में बिखरे हुए बालों वाला मोटा व्यक्ति मिला। उसने पूछा- तुम कौन हो? उत्तर मिला- मैं क्रोध हूँ। कहाँ रहते हो? मानव के मस्तिष्क में रहता हूँ। भक्त आगे बढ़ा तो एक स्त्री उदास, दुबली-पतली, मुँह लटकाए चली जा रही थी। उसने पूछा- तुम कौन हो? स्त्री ने कहा- मैं चिन्ता हूँ, मन में रहती हूँ। वह आगे चला तो एक व्यक्ति मिला, झुर्रियों वाला, दुबला-पतला, जिसकी कमर झुकी हुई थी। उसने भी उत्तर दिया कि- मैं बुढ़ापा हूँ, शरीर में रहता हूँ। और आगे जाने पर एक व्यक्ति मिला, सौम्य, शान्त। पूछा- तुम कौन हो भाई? उसने कहा- मै विवेक हूँ, मानव के मस्तिष्क में रहता हूँ। पर वहाँ तो क्रोध रहता है। हाँ, जब क्रोध रहता है, तब मैं नहीं रहता। आगे एक नारी मिली, सौम्य सुन्दर और शान्त। वह बोली- मैं शान्ति हूँ, मन में रहती हूँ। पर वहाँ तो चिन्ता रहती है। हाँ, जब चिन्ता रहती है, तब मैं नहीं रहती, जब मैं वहाँ रहती हूँ, तो चिन्ता गायब हो जाती है। पर हाँ, मैं रहती प्रभु भक्तों के मन में ही हूँ। आगे चलकर एक स्वस्थ्य, सुन्दर, तेजस्वी व्यक्ति मिला। उससे पूछने पर वह बोला- मैं स्वास्थ्य हूँ, और शरीर में रहता हूँ। पर वहाँ तो बुढ़ापा रहता है। जब बुढ़ापा आता है तब मैं नहीं रहता, लेकिन, मैं केवल प्रभु भक्तों में ही रहता हूँ।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रार्थना वास्तव में केवल श्रेष्ठता के लिए होनी चाहिए। हम श्रेष्ठ और सन्मार्गी बनें, दूसरों की सेवा, सहायता कर सकें और अपने साथ उन्हें भी ऊँचा उठा सकें। प्रार्थना का सबसे सुन्दर रूप समर्पण-योग है। हम अपने जीवन को परमात्मा के चरणों में समर्पित कर दें। उनकी इच्छा आकांक्षा को ही अपनी इच्छा आकांक्षा मानें। किसी विद्वान् ने सच कहा है- प्रार्थना करने वाला प्रभु की महान् प्रसन्नता का

अधिकारी होता है। ऐसा कौन सा शुभ कार्य है जो प्रभु की प्रसन्नता से सफल नहीं होता?

अदन के बादशाह के दरबार में शेख सादी एक सन्त विचारक थे। एक बार किसी दरबारी से प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे कुछ जागीर ईनाम में दे दी। शेख सादी यह सुनकर फूट-फूट कर रोने लगे। दरबारी ने कहा- इतन बड़े विचारक होकर भी तुम रो रहे हो? वह जागीर तुम ले लो। शेख सादी ने कहा- अरे मूर्ख! मैं इसलिये नहीं रोया कि वह जागीर तुम्हें मिली है, रोना मुझे इस बात पर आया कि इतने छोटे बादशाह को खुश करके इतनी बड़ी जागीर मिल सकती है, तो बादशाह के बादशाह उस खुदा को खुश किया होता तो दोनों जहाँ की दौलत मिल जाती।

कहने का तात्पर्य है कि हम भौतिक जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रयास और पुरुषार्थ तो करें, पर उससे मिलने वाली सफलता, असफलता को ईश्वरीय इच्छा मानकर चलें। पल भर की प्रार्थना अगर हृदय से की जाय तो पर्याप्त है, ईश्वर को लुभाने के लिए लम्बी प्रार्थना की आवश्यकता नहीं होती।

वेदों में जो प्रार्थनाओं का स्वरूप है, उन भावनाओं को सीखकर हम निःस्वार्थ-भाव से मानव-मात्र के कल्याण को प्राथमिकता दें तो हमें स्वयं आत्म संतोष मिलेगा और सम्पूर्ण देश, समाज व प्राणीमात्र को भी लाभ मिलेगा।

लेखिका- डॉ. रोचना भारती
साभार- अमृत मन्थन

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

आत्म निवेदन

जानिये रामायण २ को

एक लम्बे कालखण्ड के मध्य ऐतिहासिक वृत्तान्त में परिवर्तन/परिवर्धन/प्रक्षेप होते रहे हैं, रामायण भी इसका अपवाद नहीं है। अतः इतिहास की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण ही अपेक्षाकृत प्रामाणिक है इसमें सन्देह नहीं। इस शृंखला में उन पाठकों तक जिनकी जानकारी का स्रोत मात्र टी.वी. धारावाहिक हैं हम तथ्यात्मक जानकारी देने का प्रयास कर रहे हैं।

पूर्वानुराग

स्वयंवर के पूर्व (वाल्मीकि रामायण में अनुपलब्ध) क्या राम और सीता ने एक दूसरे को देखा था और एक दूसरे के प्रति उनके मनों में अनुराग उत्पन्न हुआ था? इसका उत्तर वाल्मीकि में नकारात्मक है जबकि तुलसीदास जी के 'मानस' में इसका विस्तृत विवरण मिलता है। राम लीलाएँ, टेलीविजन धारावाहिक तुलसी का अनुकरण करते हैं, इस कारण पुष्प वाटिका प्रकरण वास्तविक है यह जन मानस में स्वीकृत तथ्य है।

देखिये- अपने मिथिला प्रवास में श्री राम और लक्ष्मण पुष्प लेने महाराजा जनक की वाटिका में जाते हैं। गोस्वामी जी लिखते हैं-

समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई।। - मानस.२२६/१

(पूजा का) समय जानकर, गुरु की आज्ञा पाकर दोनों भाई फूल लेने चले।

भूप बागु बर देखेउ जाई। जहँ बसन्त रितु रही लोभाई।।

लागे बिटप मनोहर नाना। बरन बरन बर बेलि बिताना।।

उन्होंने जाकर राजा का सुन्दर बाग देखा, जहाँ वसन्त ऋतु लुभाकर रह गई है। मन को लुभानेवाले अनेक वृक्ष लगे हैं। रंग-बिरंगी उत्तम लताओं के मण्डप छाए हुए हैं।

गोस्वामी जी के अनुसार उसी समय सीता जी अपनी सहेलियों के साथ वाटिका में आती हैं।

तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई।।

अर्थात् उसी समय माता के कहने से वहाँ गौर पूजने के उद्देश्य से सीता जी आयीं।

अब सीता जी की सहेलियों को जब राम-लक्ष्मण के दर्शन होते हैं तो वे सीताजी से कहती हैं-

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए।।

स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी।।

भावार्थ- (उसने कहा-) दो राजकुमार बाग देखने आए हैं। किशोर अवस्था के हैं और सब प्रकार से सुन्दर हैं। वे साँवले और गोरे (रंग के) हैं, उनके सौंदर्य को मैं कैसे बखानकर कहूँ। वाणी बिना नेत्र की है और नेत्रों के वाणी नहीं है।

(अर्थात् आँखों और वाणी का सम्बन्ध बाधित है, जो देखा है वह वैसा ही वाणी से कहा नहीं जा रहा और जो वाणी से कहा जा रहा है वह ठीक वैसा नहीं है जैसा देखा गया है)

अब सकुचाती हुयीं सीता जी ओट में से श्री राम को देखती हैं और अनायास ही उनकी ओर आकर्षण का अनुभव करती हैं। उधर श्री राम भी वैसा ही अनुभव करते हैं। तुलसी लिखते हैं-

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा।
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता।।

भावार्थ- जिसकी अलौकिक सुन्दरता देखकर स्वभाव से ही पवित्र मेरा मन क्षुब्ध हो गया है। वह सब कारण (अथवा उसका सब कारण) तो विधाता जानें, किन्तु हे भाई! सुनो, मेरे मंगलदायक (दाहिने) अंग फड़क रहे हैं।

उधर सीता जी भी देर होने के डर से अपने निवास को लौट जातीं हैं।

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ बिलंबु मातु भय मानी।
धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरी अपनपउ पितुबस जाने।।

भावार्थ- सखी की यह रहस्यभरी वाणी सुनकर सीताजी सकुचा गईं। देर हो गई जान उन्हें माता का भय लगा। बहुत धीरज धरकर वे श्री रामचन्द्रजी को हृदय में ले आईं और (उनका ध्यान करती हुई) अपने को पिता के अधीन जानकर लौट चलीं।

तो इस प्रकार हम देखते हैं कि पुष्प वाटिका का यह प्रकरण प्रसिद्ध तथा प्रचलित तो है पर प्रामाणिक नहीं क्योंकि वाल्मीकि रामायण में इसका नितान्त अभाव है।

कम्ब रामायण में भी पूर्वानुराग दृष्टिगत् होता है। वहाँ लिखा है-

राम के मिथिला में प्रवेश करते समय राम और सीता एक दूसरे को देखते हैं और दोनों में प्रेम उत्पन्न होता है। 'कल्पनातीत सौन्दर्य से युक्त सीता इस प्रकार कन्या भवन पर खड़ी थीं कि राम-लक्ष्मण-विश्वामित्र मुनि के पीछे-पीछे उसी कन्या भवन के निकट होकर गए। संयोगवश राम की दृष्टि सीता पर पड़ी और इसी समय सीता की दृष्टि भी राम पर पड़ गयी फिर क्या था नेत्रों ने नेत्रों को ग्रस लिया। अत्यन्त सुरुचि पूर्ण होने के कारण एक दूसरे का रसास्वादन करने लगे। इसी के द्वारा दोनों के चित्त भी जुड़कर एक हो गए। तदनन्तर दोनों अपनी सुध-बुध खो, एक दूसरे के परवश हो महान् व्यक्ति राम ने भी सीता को निहारा और उसने भी राम को निहारा। - १/१०/३५

तो वाल्मीकि को छोड़कर यह पूर्वानुराग अनेक जगह आया है।

ऐसा ही एक प्रकरण यह है कि तथाकथित सीता स्वयंवर में क्या रावण आया था?

तो वाल्मीकि के अनुसार तो जब स्वयंवर ही नहीं हुआ तो रावण की उपस्थिति का प्रश्न व्यर्थ ही है। बहु

प्रचलित कथा में बताया जाता है कि रावण स्वयंवर में आया था। परन्तु देवताओं को डर लगा कि यह तो धनुष भंग कर देगा अतः इसे यहाँ से विदा कर देना चाहिए, अतः वहाँ एक आकाशवाणी होती है। 'ए! रावण तेरी लंका में आग लग गयी है।' यह सुनकर रावण तत्काल स्वयंवर स्थल से प्रस्थान कर जाता है।

ऐसा लगता है कि जिसकी जो मर्जी आयी उसने वह लिख मारा। देखिये अन्यत्र रावण स्वयं इस बात का खण्डन करता है।

देवीभागवत पुराण में रावण सीता से कहता है कि मैंने तुमको जनक से माँगा तक किन्तु उन्होंने धनुष परीक्षा में सफलता ही विवाह की शर्त रखी थी। शिवचाप के भय से मैं तुम्हारे स्वयंवर में सम्मिलित नहीं हुआ।

रुद्रचाप भयान्नाहँ संप्रास्तस्तु स्वयंवरे। – स्कन्ध ३ अध्याय २८

उधर रामचरित मानस में यह माना गया है कि रावण और बाणासुर तक भी सीता से विवाह के इच्छुक होकर आये थे।

नृप भुजबल बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू।
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासन गवँहिं सिधारे।।

भावार्थ- राजाओं की भुजाओं का बल चन्द्रमा है, शिव का धनुष राहु है, वह भारी है, कठोर है, यह सबको विदित है। बड़े भारी योद्धा रावण और बाणासुर भी इस धनुष को देखकर गौं से (चुपके से) चलते बने (उसे उठाना तो दूर रहा, छूने तक की हिम्मत न हुई)।

इसी प्रकरण में जब श्री राम धनुष भंग हेतु प्रस्तुत हो रहे होते हैं तो वहाँ वह ऐसा कर पायेंगे इस पर सन्देह किया गया है।

रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।

रावण और वाणासुर ने जिस धनुष को छुआ नहीं और सब राजा घमण्ड करके हार गए वही धनुष इस सुकुमार राजकुमार के हाथ में दे रहे हैं। हंस के बच्चे कहीं मंदराचल पहाड़ को उठा सकते हैं।

इस प्रकार श्री रामचरित मानस में रावण के साथ वाणासुर का उल्लेख तो है परन्तु इस स्वयंवर अवसर पर नहीं। उन्होंने पूर्व में कभी प्रयत्न किया था। परन्तु आजकल श्री राम सम्बन्धी नाटकों तथा लीलाओं में रावण तथा वाणासुर का एक दूसरे से वार्तालाप तक दिखाया जाता है।

अब इस प्रकरण में एक और बात

रामचरित मानस में स्वयंवर स्थल पर ही परशुराम जी का आना और राम-लक्ष्मण पर कुपित होना बताया गया है।

तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयसु भृगुकुल कमल पतंगा।।

उसी मौके पर शिव जी के धनुष का टूटना सुनकर भृगुकुल रूपी कमल के तुल्य परशुराम जी आये।

परन्तु वाल्मीकि रामायण में विवाहोपरान्त जब बारात लौट रही होती है तब परशुराम जी आते हैं और विशेष विवाद भी नहीं होता।

समय बीतने के साथ राम कथा में अनेक प्रकरणों का मिश्रण, परिवर्तन अथवा परिवर्धन होता रहा है। विडम्बना यह है की वाल्मीकि में जो प्रकरण हैं ही नहीं उन्हें अर्वाचीन राम कथाओं से ग्रहण कर प्रसिद्ध कर दिया गया है। आज उन्हीं को प्रमाणिक माना जाने लगा है। सुधी पाठकों के विचारार्थ हम यह शृंखला प्रस्तुत कर रहे हैं।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

वेदों पर आक्षेप मूर्खता है ②

[वेदों पर किए प्रत्येक आक्षेप का उत्तर–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा]

अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः।
योनावृतस्य सीदत॥ – ऋग्वेद ९/१३/९

आधिभौतिक भाष्य १– (पवमानाः, स्वर्दृशः) सूर्य के समान तेजस्वी वेदवित् पवित्रात्मा व पुरुषार्थी राजा **(अपघ्नन्तः, अराव्णः)** ऐसे नागरिक, जो धनवान् होने पर भी राष्ट्रहित में न्यायकारी राजा द्वारा लिये जाने वाले 'कर' का भुगतान न करते हों अथवा 'कर' चोरी करते हैं अथवा आवश्यक होने पर किसी निर्धन का अथवा परोपकार के कार्य में आर्थिक सहयोग नहीं करते हैं अथवा समाज और राष्ट्र के हितों के विरोधी वा उदासीन होते हैं, उन्हें राजा उचित दण्ड देता हुआ **(ऋतस्य, योनौ, सीदत) {ऋतम् = ब्रह्म वाऽऋतम् (श.४.१.४.१०), सत्यं विज्ञानम् (म.द.ऋ.भा.१.७१.२)}** समस्त ज्ञान-विज्ञान के मूल वेद के कारण रूप परब्रह्म परमात्मा में निवास करता है।

भावार्थ- किसी भी राष्ट्र का राजा शरीर, मन और आत्मा से पूर्ण स्वस्थ और बलवान् होना चाहिए। ऐसा राजा ही सतत पुरुषार्थ करने वाला हो सकता है। शरीर, मन वा आत्मा में से किसी के निर्बल वा रोगी होने पर कोई भी राजा राष्ट्र के संचालन में समर्थ नहीं हो सकता। इसके साथ ही जब तक राजा ज्ञान-विज्ञान से पूर्णतः सम्पन्न नहीं हो, तब तक भी राजा राष्ट्र का उचित संचालन नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसे राजा को उसके चाटुकार, चालाक-स्वार्थी मन्त्री, प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिक, पूँजीपति एवं दूसरे देशों के राजा भ्रमित करके अपना प्रयोजन सिद्ध करते रह सकते हैं। ऐसा राजा दण्डनीय और सम्माननीय पात्रों का विवेक नहीं रख सकता, जबकि विद्वान् और योगी राजा इसकी पहचान करके दण्डनीयों को दण्ड और सम्माननीयों को सम्मान देकर सम्पूर्ण राष्ट्र का हित सम्पादन करता है। जिस राष्ट्र में दण्डनीयों को दण्ड और सम्माननीयों को सम्मान तथा सत्य व उन्नति के मार्ग पर बढ़ने वालों को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता, वह राष्ट्र अराजकता, हिंसा, भय, अशान्ति, अन्याय और तीनों प्रकार के दुःखों से ग्रस्त होता हुआ विनाश को प्राप्त होता है। अपराधी को दण्ड के विषय में भगवान् मनु का कथन है–

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः, दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति, दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः। (मनु.)

अर्थात् उचित दण्ड ही प्रजा पर शासन करता है और

दण्ड ही प्रजा की रक्षा करता है। दण्ड कभी शिथिल नहीं होता, इसलिए विद्वान् लोग दण्ड को ही धर्म कहते हैं।

कंजूस को दण्ड देने के विषय में महात्मा विदुर ने कहा है-

द्वावम्भसी निवेष्टव्यौ, गले बध्वादृढां शिलाम्।
धनवन्तमदातारं, दरिद्रं चातपस्विनम्।।

- विदुरनीति १/६५

अर्थात् धनवान् होते हुए भी परोपकार के कार्यों में दान न देने वाले और निर्धन होते हुए भी परिश्रम न करने तथा दुःख सहना न चाहने वाले को गले में

भारी पत्थर बाँधकर गहरे जलाशय में डुबो देना चाहिए। यहाँ सम्पूर्ण प्रजा के लिए भी सन्देश है कि धनी व्यक्ति धन को ईश्वर का प्रसाद समझकर त्यागपूर्वक ही उपयोग करे। वह निर्धन व दुर्बल की अवश्य सहायता करे। उधर निर्धन व्यक्ति धनी से ईर्ष्या कदापि न करे, बल्कि स्वयं धर्मपूर्वक पुरुषार्थ करता रहे और दुःखों को भी सहन करने का अभ्यास करे। वह किसी के धन की चोरी करके धनी होने का प्रयास न करे अथवा बिना कर्म और योग्यता के धन, पद वा ऐश्वर्य पाने की इच्छा कभी नहीं करे।

आधिभौतिक भाष्य २- (पवमानाः, स्वर्दृशः) वेदविद्या के प्रकाश से प्रकाशमान ब्रह्मतेज से सम्पन्न पवित्रात्मा योगी आचार्य वा आचार्या अपने विद्यार्थियों को विद्याभ्यास कराते हुए **(अपघ्नन्तः, अराव्णः)** विद्या को ग्रहण करने की इच्छा न करने वाले अथवा ग्रहण न करने वाले शिष्य और शिष्याओं की आवश्यक एवं उचित ताडना भी करें। **(ऋतस्य, योनौ, सीदत)** ऐसे आचार्य और आचार्या सम्पूर्ण सत्य विद्या के मूल कारण वेद अथवा परमात्मा में निरन्तर विराजमान रहते हैं।

भावार्थ- वेद ज्ञान से सम्पन्न निरन्तर योगनिष्ठ विद्वान् वा विदुषी को ही आचार्य वा आचार्या बनने का अधिकार होना चाहिए। उनको चाहिए कि वे अपने शिष्य वा शिष्याओं का प्रीतिपूर्वक और निष्कपट भाव से अध्यापन करें। जो विद्यार्थी विद्याग्रहण में प्रमाद करें और प्रीतिपूर्वक समझाने से भी न समझें, उन्हें समुचित दण्ड अवश्य दें। इस विषय में ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में व्याकरण महाभाष्य का प्रमाण देते हुए लिखा है-

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः।।

अर्थात् जो माता, पिता और आचार्य्य, सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं, वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का लाड़न करते हैं, वे अपने सन्तानों और शिष्यों को विष पिला के

नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं और सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता, पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रक्खें।

ध्यातव्य- इसी प्रकार माता-पिता आदि का ग्रहण करके भी अन्य प्रकार के आधिभौतिक भाष्य भी किये जा सकते हैं।

आध्यात्मिक भाष्य– **(पवमानाः, स्वर्दृशः)** यम-नियमों से पवित्र हुआ योगी ब्रह्म का साक्षात् करने वाला **(अपघ्नन्तः, अराव्णः)** सभी प्रकार के दोषों का परित्याग न कर पाने की अनिष्ट चित्तवृत्तियों को दूर करता है अर्थात् वह योगी पुरुष सभी प्रकार की अनिष्ट वृत्तियों को शनैः-शनैः निरुद्ध करता चला जाता है। जब उसकी वृत्तियाँ निरुद्ध हो जाती हैं, तब **(ऋतस्य, योनौ, सीदत)** वह योगी पुरुष सब सत्य विद्याओं के मूल परब्रह्म परमात्मा में विराजमान हो जाता है अर्थात् वह ब्रह्म साक्षात्कार कर लेता है।

भावार्थ- जब कोई योगाभ्यासी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे यमों एवं शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान जैसे नियमों से स्वयं को पवित्र बना लेता है, तब उसकी चित्त की वृत्तियाँ निरुद्ध होने लगती हैं, जिससे वह ब्रह्म साक्षात्कार करने में समर्थ हो जाता है।

यहाँ यह स्पष्ट होता है कि बिना यम-नियमों के पालन किये कोई भी व्यक्ति योगी नहीं बन सकता।

आक्षेप–१ का समाधान समाप्त

संसार भर के वेदविरोधी वा भ्रान्त पाठकगण! मेरे इन तीन श्रेणी के कुल पाँच भाष्यों को पढ़कर बतायें कि इस मन्त्र में हिंसा का विधान नहीं, बल्कि किसी भी राष्ट्र, समाज वा विश्व के कल्याण का सुन्दर उपाय सूत्र रूप में दर्शाया है। वास्तविक एवं बुद्धिमान् जिज्ञासु इस एक आक्षेप पर ही मेरे समाधान से वेद पर आक्षेप कर्त्ताओं की भावनाओं तथा भाष्यकारों की कमियों को समझ जायेंगे, पुनरपि मैं अन्य आक्षेपों का उत्तर भी शनैः-शनैः देता रहूँगा। -आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

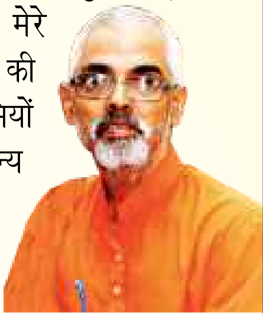

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर
भागलभीम, भीनमाल
चलभाष- ९४१४८३४४०३

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

यहाँ आकर सभी बलिदानियों व गुरुजनों के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान मिला। जिससे जीवन में और अच्छे संस्कार के साथ जीने की प्रेरणा प्राप्त हुयी। आप का यह कार्य अत्यन्त सराहनीय है।

नवलखा महल की इस सांस्कृतिक वीथिका में आकर जिस प्रकार भारतीय संस्कृति यथा सोलह संस्कार, आर्य समाज (स्वामी) दयानन्द सरस्वती जी तथा सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हुई, वह अद्भुत है। साथ ही गाइड द्वारा जिस प्रकार से सम्पूर्ण विवरण दिया गया, वह सुव्यवस्थित रहा, हिन्दी शब्दों का चयन उत्तम है।

– रोहित कुमार दुबे एवं संगीता उपाध्याय; आगरा

अनेक वर्षों से नवलखा महल के बारे में सुन रहे थे। आज यहाँ पर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ पर जो भी कार्य किया गया वह निःसन्देह अभूतपूर्व है। यहाँ पर जो व्यवस्था बनायी गयी है वह अति सुन्दर, व्यवस्थित एवं समुचित है। इस सारी व्यवस्था को प्रारम्भ करने वाले, प्रेरणा देने वाले एवं सम्पन्न करने वाले सभी को मेरा हार्दिक धन्यवाद है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जीवनी, सोलह संस्कार, बाकी जो यहाँ प्रस्तुत किया गया है सभी के बारे में विस्तृत जानकारी इससे अपार जन समुदाय लाभान्वित हो रहा है और होता रहेगा। यह व्यवस्था सभी आर्यों को अपने-अपने शहर में ऐसा प्रस्तुत करने की प्रेरणा दे रही है। – चन्द्रकान्त, आर्य समाज सदर मेरठ

The museum depicts Swami ji's all the stories nicely and the guide who guided us through it wonderfully. It was a moral and spiritual experiences for us. Nice explanation. Very Culture rich Place with nice paintings & Description.

- Hemadri Purohit, Avishi Solanki & Naman Sharma

{यद्यपि संवत्सर पर्व निकल चुका है। परन्तु विचार हेतु उत्कृष्ट सामग्री का सदैव स्वागत होना चाहिए। इस हेतु विदुषी आर्य डॉ. मंजुलता जी का लेख यहाँ दे रहे हैं।}

संवत्सर का प्रारम्भ, आदि सृष्टि में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन, प्रतिपदा को प्रथम सूर्योदय होने पर हुआ था। आज चैत्रमास की प्रतिपदा अर्थात् गुढ़ीपडवा को, सृष्टिसंवत् की आयु- १ अरब, ९६ करोड, ०८ लाख, ५३ हजार, १२५ वर्ष हो गयी है। नूतन वर्ष के स्वागतार्थ आर्य-संस्कृति में, आनन्दानुभव के साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठान पूर्वक उत्सव मनाने की परिपाटी शुरू से रही है। ऋग्वेद १०/१९०/१.२ की ऋचा है-

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।।

इसमें सृष्टि-उत्पत्ति का क्रम देते हुए बताया गया है कि सर्वप्रथम ऋत और सत्य नामक सार्वकालिक और सार्वभौमिक नियमों का प्रादुर्भाव हुआ। फिर मूल प्रकृति में विकृति हो कर अन्तरिक्षस्थ समुद्र के प्रकट होने के पश्चात् विश्व के कर्त्ता ने दिन-रात को करते हुए संवत्सर को बनाया।

वेदोपदेश द्वारा इस संवत्सर के आरम्भ का ज्ञान सर्वप्रथम मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को हुआ। उन्होंने जान लिया कि प्रत्येक सृष्टि, कल्प के आदि में यथानियम होती है। उसी के अनुसार प्रतिवर्ष संवत्सराम्भ हो कर- वर्ष, मास और अहोरात्र की कालगणना संसार में प्रचलित हुई। इस प्रकार सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ। सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार 'मधु' कहलाया था और फिर वही ज्योतिष में चान्द्रकाल गणनानुसार 'चैत्र' कहलाने लगा था। ज्योतिष के 'हिमाद्रि' ग्रन्थ में भी एक श्लोक आया है-

चैत्र मासि जगद ब्रह्मा, ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदय सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की।

प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य कृत 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में भी आया है- चैत्रमास शुक्ल पक्ष के

आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग आदि एक साथ आरम्भ हुए। आगे चलकर इस पूर्व-परम्परा के अनुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से ही शुरू किये गए। ब्रह्म दिन, सृष्टि संवत्, वैवस्वत मनु के मन्वन्तर का आरम्भ, सतयुगादि आरम्भ, कलि संवत्, विक्रमी संवत् चैत्र प्रतिपदा से ही होते हैं। विक्रमी संवत् २०८० से आज २०८१ हो रहा है। सृष्टि की उत्पत्ति, कालगणना का शुभारम्भ आज से ही हुआ है। श्रीराम का राज्यारोहण, महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, महाराज विक्रमादित्य का विजयोत्सव भी इसी दिन किया गया। ऋषि दयानन्द ने, आज चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही, विक्रमी संवत् १६३२ में, अर्थात् ई.स. १८७५ में गिरगाँव मुंबई में,

पारसी डॉ. मानक जी अदेर जी के उद्यान में आर्यसमाज की स्थापना की। प्रारम्भ में ही महादेव गोविन्द रानाड़े, गोपालराव हरि देशमुख, सेवकलाल, कृष्णदास, गिरधरलाल दयालदास कोठारी आदि कई प्रतिष्ठित पुरुष आर्यसमाज के सदस्य बने। बम्बई के बाद १८७७ ई.स. में लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हुई। यहाँ रायबहादुर मूलराज तथा लाला साईंदास जैसे कर्मठ सहयोगी ऋषि दयानन्द को मिले। यहाँ आर्यसमाज के १० नियम निश्चित हुए। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित यह आर्यसमाज का आन्दोलन उन्नीसवीं शती का सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन था।

ऋषि दयानन्द वेद शास्त्रों के गम्भीर विद्वान्, महान् सुधारक, राष्ट्रवादी, प्रगतिशील चिन्तक तथा श्रेष्ठ साहित्यकार थे। आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के नेताओं में उनका स्थान अद्वितीय है। सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, करुणाशीलता और अहंकार शून्यता उनके ओजस्वी व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। वे अगाध गुणों के सागर थे और उनका कर्मक्षेत्र भी अगाध था। वेदों के सत्यस्वरूप के सम्बन्ध में छाया हुआ सघन अन्धकार, आर्यसाहित्य के सम्बन्ध में भारत की तथाकथित पण्डित मण्डली में व्यापक उपेक्षा, और इनके साथ ही तांत्रिक तथा वाममार्गी मतों का प्राबल्य, शूल बनकर ऋषि के हृदय को अत्यन्त वेदना पहुँचाता था। मातृभूमि की दासता उन्हें अहर्निश अखरती थी, गौवंश का-ह्रास मानसिक पीड़ा पहुँचाता था। एक तरफ दरिद्र-दलित दशा में भारतवासी दुःखी थे, और दूसरी तरफ भारतीयों का एक वर्ग, अंग्रेजी शिक्षा के परिणामस्वरूप पश्चिम की चकाचौंध की आँधी में बह रहा था। ऐसे समय में आदित्य ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द ने, सहस्राब्दियों से कुण्ठित, शोषित एवं अपमानित इस देश को राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक क्रान्ति के मार्ग पर ला कर खड़ा किया। ऋषि दयानन्द ने घोषणा की कि, वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। रुढ़ियों और अंधविश्वासों की जड़ों पर कुठाराघात कर राष्ट्र में जागृति का शंखनाद किया। विधर्मियों को शास्त्रार्थ की चुनौती देकर उनके छक्के छुड़ाने के साथ, आर्य-धर्म की श्रेष्ठता का भी उन्हें कायल बना दिया। उन्होंने प्रगति के नाम पर केवल भागने का नहीं, अपितु पीछे की ओर देखने का तथा भविष्य का पथ प्रशस्त करने का आह्वान किया। उन्होंने स्त्री-शिक्षा, शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली, और देश की एक राष्ट्रभाषा के रूप में देवनागरी में लिखित हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का युग प्रवर्तक घोष किया। उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ़ पाया। वे अपने समय के सबसे बड़े समाज संस्कारक बने।

आर्यसमाज की स्थापना उनका सबसे अन्यतम कार्य था। सन् १८७५ ई. स. में महर्षि द्वारा स्थापित

आर्यसमाज समस्त बुराईयों के विरुद्ध एक बगावत एवं विद्रोह की आग बन कर फैल गया। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का अभ्युदय हुआ। इस पवित्र संस्था का उद्देश्य रखा गया "समस्त संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना।" किसी भी प्रकार की संकीर्णता अथवा सांप्रदायिकता, जातीयता अथवा कृत्रिम देशभक्ति का लेशमात्र भी न रखते हुए, मानवमात्र के लिए इतना उदारतापूर्ण तथा इतना सर्वांगीण उद्देश्य शायद ही किसी अन्य संस्था के संस्थापक ने घोषित किया हो। ऋषि दयानन्द ने सर्वत्र आर्य का अर्थ- धर्मयुक्त गुणकर्म स्वभाव वाले, उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाले, उत्तम जन इत्यादि किया है, और इन्हीं के संगठन को आर्यसमाज की संज्ञा दी है। ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था कि 'सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बने।' ऋषि दयानन्द के जीवन काल में ही आर्यसमाज का सार्वत्रिक प्रचार हुआ, देश के सभी भागों में उसकी शतशः शाखाएँ स्थापित हुईं और सहस्रों व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बने।

आर्यसमाज का प्रारम्भिक स्वरूप बड़ा तेजस्वी था। वह एक सशक्त ज्वार के समान था, जिसने न केवल भारत को अपितु सुसंस्कृत विश्व को आप्लावित कर आन्दोलित कर दिया था। अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक डॉक्टर एन्ड्रयू जैकसन डेविस ने आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप का जो चित्र खींचा है, वह बड़ा ही अनूठा है। आर्यसमाज को उसने जिस रूप में देखा, उसका भाषान्तर इस प्रकार से है- 'मुझको एक आग दिखाई पड़ती है। जो सब जगह फैल रही है... अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों, अफ्रीका के बीहड़ जंगलों, एशिया की ऊँची पर्वत चोटियों और योरोप के महान् राज्यों पर मुझे उसकी लपटें सुलगती हुई दिखाई दे रहीं हैं। इस अपरिमित आग को देख कर, जो निस्सन्देह राज्यों, साम्राज्यों और समस्त संसार की नीति मैं अत्यन्त आनन्दित हो कर हर्षमय जीवन बिता रहा हूँ, तथा व्यवस्था के सब दोषों को भस्म कर डालेगी। असीम उन्नति की आशा-विद्युत् से मनुष्य का हृदय चमक रहा है। वक्ताओं, कवियों और ग्रन्थ निर्माताओं की शिक्षाओं मे भी कभी-कभी उसकी चमक दीख जाती है। आर्यसमाज की भट्टी में यह आग सनातन पुरातन आर्यधर्म को स्वाभाविक पवित्र रूप में लाने के लिए सुलगाई गई है, भारत के एक परम योगी ऋषि दयानन्द के हृदय में यह आग प्रगट हुई थी। हिन्दू और मुसलमान उस प्रचण्ड आग को बुझाने के लिए चारों ओर से पूरे वेग के साथ दौड़े। ईसाइयों ने एशिया की इस प्रचण्ड ज्योति को बुझाने में हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ दिया। परन्तु ईश्वरीय ज्योति और भी अधिक प्रज्ज्वलित हो चारों ओर फैल गई। सम्पूर्ण विरोध एवं विघ्न-बाधाओं की घटा इस आग के सामने न टिक सकी। रोग के स्थान में तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविश्वास के स्थान में विश्वास, द्वेष के स्थान में सद्भाव, बैर के स्थान में समता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान में सुख, भूतप्रेतों के स्थान में परमेश्वर एवं प्रकृति का राज्य हो जाएगा। मैं इस आग को परम मांगलिक मानता हूँ। जब यह आग सुन्दर भूतल पर नवजीवन का निर्माण करेगी, तब सर्वत्र सुख, शान्ति और सन्तोष छा जाएगा।'

यह है आर्यसमाज के उज्ज्वल स्वरूप की झलक। भारतमाता के बन्धन काटने श्रेय आर्यसमाज को ही है। सर वैलेण्टाइन शिरोल ने तमाम भारत दौरा करने के बाद अपनी पुस्तक 'अनरैस्ट इन इण्डिया' की अन्तिम पंक्तियों में यह रिपोर्ट लिखी थी कि, "जहाँ-जहाँ आर्यसमाज है, वहाँ-वहाँ राजद्रोह प्रबल है।" महात्मा गाँधी ने भी सत्याग्रह परीक्षण के बाद यह घोषणा की थी कि, "जेलों में रह कर कष्ट सहने वालों में ८०% आर्यसमाजी हैं।" इंग्लैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रैमजे मॅकडाल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्या से खड़े गुरुकुल कांगडी का निरीक्षण करने के बाद ये महत्वपूर्ण बयान दिए थे, कि- "पहाड़ों और नदी के बीच में स्थित उस गुरुकुल नाम की भूमि में

बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि जिनमें से एक भी सरकार का नौकर बनने को तैयार नहीं होगा। माँ-बाप से बिलकुल अलग रख कर जिनको अलौकिक पाठ पढ़ा करके आर्यसमाज का सच्चा मिशनरी बनाया जा रहा है, उनसे कदापि यह आशा नहीं की जा सकती कि वे किसी अत्याचार के आगे झुकेंगे।''

इतिहास बताता है कि उस समय के आर्यसमाजी- अज्ञान, अन्याय, अभाव रूपी दानवों को समाप्त करने के लिए अपना खून तक बहाने को तैयार रहते थे। श्रद्धानन्द, लेखराम, राजपाल जैसों का शानदार बलिदान आज भी हमें चुनौती दे रहा है। इस समाज के मस्त दीवाने और परवाने अपने स्वार्थ को लात मार कर परमार्थ की वेदी पर आहुत हो गए, इसके प्रहरियों ने विद्वान् बन कर, कवि बन कर, शास्त्रार्थ महारथी बन कर नेता और क्रान्तिकारी बन कर, सेवक बन कर, बलिदानी बन कर विश्व का कायाकल्प करने की भूमिका अदा की है।

देश, आज आर्यसमाज स्थापना दिवस पर, राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता-प्राप्ति के पुनीत कार्य में आर्यसमाज के सर्वोपरि योगदान को याद कर रहा है। समाजसुधार के क्षेत्र में आर्यसमाज प्रमुख संस्था रही है। विवाहप्रथा में समुचित सुधार, वर्णाश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या, अस्पृश्यता-निवारण, नारी शिक्षा आदि क्षेत्रों में आर्यसमाज का कर्तृत्व श्लाघनीय रहा है। सुधार और संस्कार का कार्य वह आज भी जीवन्त रूप में कर रहा है। इतिहास ने स्वीकार किया है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे आर्यसमाज का संस्थागत योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान रहा है। आर्यसमाज ने मानवी विकास के सभी पहलुओं का स्पर्श किया है। राष्ट्रवाद और मानव जीवन के सभी अंगों का शुद्ध व उज्ज्वल रूप आर्यसमाज को अन्य आन्दोलनों से बिलकुल अलग तथा महत्वपूर्ण बना देता है।

- डॉ. मंजुलता विद्यार्थी
उन्नत प्रौद्योगिकी रक्षा संस्थान, गिरिनगर, पुणे-२५

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

जिस देश के गुरुकुल इतने समृद्ध हों उस देश को आखिर कैसे गुलाम बनाया गया होगा?

आइए जानते हैं हमारे गुरुकुल कैसे बन्द हुए।

इंग्लैंड में पहला स्कूल १८११ में खुला उस समय भारत में ७,३२,००० गुरुकुल थे, 'मैकाले का स्पष्ट कहना था कि भारत को हमेशा-हमेशा के लिए अगर गुलाम बनाना है तो इसकी "देशी और सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था" को पूरी तरह से ध्वस्त करना होगा और उसकी जगह "अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था" लानी होगी और तभी इस देश में शरीर से हिन्दुस्तानी लेकिन दिमाग से अंग्रेज पैदा होंगे और जब इस देश की यूनिवर्सिटी से निकलेंगे तो हमारे हित में काम करेंगे।'

'१८५० तक इस देश में "७ लाख ३२ हजार" गुरुकुल हुआ करते थे और उस समय इस देश में गाँव थे "७ लाख ५० हजार" मतलब हर गाँव में औसतन एक गुरुकुल और ये जो गुरुकुल होते थे वो सब के सब आज की भाषा में 'Higher Learning Institute' हुआ करते थे। उन सबमें १८ विषय पढ़ाए जाते थे और ये गुरुकुल समाज के लोग मिलके चलाते थे न कि राजा, महाराजा।'

अंग्रेजों का एक अधिकारी था G.W. Luther और दूसरा था Thomas Munro! दोनों ने अलग अलग इलाकों का अलग-अलग समय में सर्वे किया था। Luther, जिसने उत्तर भारत का सर्वे किया था, उसने लिखा है कि यहाँ ९७% साक्षरता है और Munro, जिसने दक्षिण भारत का सर्वे किया था, उसने लिखा कि यहाँ तो १००% साक्षरता है।'

मैकाले एक मुहावरा इस्तेमाल कर रहा है- "कि जैसे किसी खेत में कोई फसल लगाने के पहले उसे पूरी तरह जोत दिया जाता है वैसे ही इसे जोतना होगा और अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी।" 'इसलिए उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैरकानूनी घोषित किया। जब गुरुकुल गैरकानूनी हो गए तो उनको मिलने वाली सहायता जो समाज की तरफ से होती थी वो गैरकानूनी हो गयी, फिर संस्कृत को गैरकानूनी घोषित किया और इस देश के गुरुकुलों को घूम-घूम कर खत्म कर दिया, उनमें आग लगा दी, उसमें पढ़ाने वाले गुरुओं को उसने मारा-पीटा, जेल में डाला।

'गुरुकुलों में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। इस तरह से सारे गुरुकुलों को खत्म किया गया और फिर अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया और कलकत्ता में पहला कॉन्वेंट स्कूल खोला गया। उस समय इसे 'फ्री स्कूल' कहा जाता था। इसी कानून के तहत भारत में कलकत्ता यूनिवर्सिटी बनाई गयी, बम्बई यूनिवर्सिटी बनाई गयी, मद्रास यूनिवर्सिटी बनाई गयी, ये तीनों गुलामी जमाने के यूनिवर्सिटी आज भी देश में मौजूद हैं।'

मैकाले ने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी थी बहुत मशहूर चिट्ठी है वो, उसमें वो लिखता है कि- "इन कॉन्वेंट स्कूलों से ऐसे बच्चे निकलेंगे जो देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन दिमाग से अंग्रेज होंगे और इन्हें अपने देश के बारे में कुछ पता नहीं होगा। इनको

अपने संस्कृति के बारे में कुछ पता नहीं होगा, इनको अपनी परम्पराओं के बारे में कुछ पता नहीं होगा, इनको अपने मुहावरे नहीं मालूम होंगे, जब ऐसे बच्चे होंगे इस देश में तो अंग्रेज भले ही चले जाएँ इस देश से अंग्रेजियत नहीं जाएगी।''

'उस समय लिखी चिट्ठी की सच्चाई इस देश में अब साफ-साफ दिखाई दे रही है और उस एक्ट की महिमा देखिये कि हमें अपनी भाषा बोलने में शर्म आती है, हम अंग्रेजी में बोलते हैं कि दूसरों पर रोब पड़ेगा, हम तो खुद में हीन हो गए हैं जिसे अपनी भाषा बोलने में शर्म आ रही है, उस देश का कैसे कल्याण सम्भव है?'

'हमारी पुरानी शिक्षा पद्धति बहुत ही समृद्ध और विशाल थी और यही कारण था कि हम विश्वगुरु थे।

हमारी शिक्षा पद्धति से पैसे कमाने वाले मशीन पैदा नहीं होते थे बल्कि मानवता के कल्याण हेतु अच्छे और विद्वान् इंसान पैदा होते थे। आज तो जो बहुत पढ़ा-लिखा है वही सबसे अधिक भ्रष्ट है, वही सबसे बड़ा चोर है।'

'हमने अपना इतिहास गवां दिया है। क्योंकि अंग्रेज हमसे हमारी पहचान छीनने में सफल हुए। उन्होंने हमारी शिक्षा पद्धति को बर्बाद करके हमें अपनी संस्कृति, मूल धर्म, ज्ञान और समृद्धि से अलग कर दिया। आज जो स्कूलों और कॉलेजों का हाल है वो क्या ही लिखा जाए! हम न जाने ऐसे लोग कैसे पैदा कर रहें हैं जिनमें जिम्मेवारी का कोई एहसास नहीं है। जिन्हें सिर्फ पद और पैसों से प्यार है। हम इतने असफल कैसे होते जा रहे हैं?'

किसी भी समाज की स्थिति का अनुमान वहाँ के शैक्षणिक संस्थानों की स्थिति से लगाया जा सकता है। आज हम इसमें बहुत असफल हैं। हमने स्कूल और कॉलेज तो बना लिए लेकिन जिस उद्देश्य के लिए इसका निर्माण हुआ उसकी पूर्ति के योग्य इंसान और सिस्टम नहीं बना पाए। जब आप अपने देश का इतिहास पढ़ेंगे तो आप गर्व भी महसूस करेंगे और रोएँगे भी क्योंकि आपने जो गवां दिया है वो पैसों रुपयों से नहीं खरीदा जा सकता। 'हमें एक बड़े पुनर्जागरण की जरूरत है। सरकारें आएँगी जाएँगी, इनसे बहुत उम्मीद करना बेवकूफी होगी, जनता जब तक नहीं जागती हम अपनी विरासत को कभी पुनः हासिल नहीं कर पाएँगे।' जागना होगा और कोई विकल्प नहीं।

हमारी ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली के कुछ उदाहरण-

1. 'अग्नि विद्या' (Metallurgy) 2. 'वायु विद्या' (Flight) 3. 'जल विद्या' (Navigation) 4. 'अन्तरिक्ष विद्या' (Space Science) 5. 'पृथ्वी विद्या' (Environment) 6. 'सूर्य विद्या' (Solar Study) 7. 'चन्द्र व लोक विद्या' (Lunar Study) 8. 'मेघ विद्या' (Weather Forecast) 9. 'पदार्थ विद्युत् विद्या' (Battery) 10. 'सौर ऊर्जा विद्या' (Solar Energy) 11. 'दिन-रात्रि विद्या' 12. 'सृष्टि विद्या' (Space Research) 13. 'खगोल विद्या' (Astronomy) 14. 'भूगोल विद्या' (Geography) 15. 'काल विद्या' (Time) 16. 'भूगर्भ विद्या' (Geology Mining) 17. 'रत्न व धातु विद्या' (Gems & Metals) 18. 'आकर्षण विद्या' (Gravity) 19. 'प्रकाश विद्या' (Solar Energy) 20. 'तार विद्या' (Communication) 21. 'विमान विद्या' (Plane) 22. 'जलयान विद्या' (Water Vessels) 23. 'अग्नेयास्त्र विद्या' (Arms & Ammunition) 24. 'जीव-जन्तु विज्ञान विद्या'

(Zoology Botany) 25. 'यज्ञ विद्या' (Material Sic) 'ये तो बात हुई वैज्ञानिक विद्याओं की, अब बात करते हैं व्यावसायिक और तकनीकी विद्या की।' 26. 'वाणिज्य' (Commerce) 27. 'कृषि' (Agriculture) 28. 'पशुपालन' (Animal

Husbandry) 29. 'पक्षिपलन' (Bird Keeping) 30. 'पशु प्रशिक्षण' (Animal Training) 31. 'यान यन्त्रकार' (Mechanics) 32. 'रथकार' (Vehicle Designing) 33. 'रत्नकार' (Gems) 34. 'सुवर्णकार' (Jewellery Designing) 35. 'वस्त्रकार' (Textile) 36. 'कुम्भकार' (Pottery) 37. 'लोहकार' (Metallurgy) 38. 'तक्षक' 39. 'रंगसाज' (Dying) 40. 'खटवाकर' 41. 'रज्जुकर' (Logistics) 42. 'वास्तुकार' (Architect) 43. 'पाकविद्या' (Cooking) 44. 'सारथ्य' (Driving) 45. 'नदी प्रबन्धक' (Water Management) 46. 'सुचिकार' (Data Entry) 47. 'गोशाला प्रबन्धक' (Animal Husbandry) 48. 'उद्यान पाल' (Horticulture) 49. 'वन पाल' (Forestry) 50. 'नापित' (Paramedical)।

लेखक- डॉ. रजनीश शुक्ल
सहायक प्रोफ़ेसर, सीएसयू भोपाल

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें। -सम्पादक

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत

ऋषि दयानन्द न आते तो आर्य जाति की आध्यात्मिक एवं सामाजिक उन्नति न होती

मनुष्य की पहचान व उसका महत्व उसके ज्ञान, गुणों, आचरण एवं व्यवहार आदि से होता है। संसार में ७ अरब से अधिक लोग रहते हैं। सब एक समान नहीं हैं। सबकी आकृतियाँ व प्रकृतियाँ अलग हैं तथा सबके स्वभाव व ज्ञान का स्तर भी अलग है। बहुत से लोग अपने ज्ञान के अनुरूप सत्य का आचरण भी नहीं करते। स्वार्थ वा लोभ तथा अनेक कारणों से वह प्रभावित होते हैं और यदि वह उचित व अनुचित का ध्यान रखें भी तथापि वह दूसरों की प्रेरणा से सत्य व असत्य सभी प्रकार के आचरण करते हैं। हमारे देश में सृष्टि की आदि से ही ईश्वर प्रेरित वेदों के आधार पर वैदिक धर्म प्रचलित था। हमारी इस सृष्टि को बने हुए १.९६ अरब वर्ष से अधिक समय हो चुका है। इसमें यदि लगभग ५००० वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध की अवधि को निकाल दें तो शेष १.९६ से अधिक अवधि तक आर्यावर्त्त वा भारत सहित पूरे विश्व में वेदों पर आधारित वैदिक धर्म ही प्रचलित रहा है। सभी लोग इसी विचारधारा, मत व सिद्धान्तों का पालन व आचरण करते थे। इसका कारण यह था कि वेद की सभी मान्यतायें सृष्टि के रचयिता एवं पालक ईश्वर द्वारा प्रेरित थीं, पूर्ण सत्य पर आधारित थीं और इनके पालन से ही मनुष्य व उसकी आत्मा का कल्याण होता है।

सृष्टि के आरम्भ से ही हमारे देश में ऋषि परम्परा थी। ऋषि सद्ज्ञान से युक्त तथा ईश्वर का साक्षात्कार की हुई योगियों की आत्मायें हुआ करती थीं। वह निर्भ्रान्त ज्ञान से युक्त होते थे। वह किसी भी व्यक्ति के प्रश्नों व आशंकाओं का समाधान अपने तर्क व युक्तियों से करने में समर्थ होते थे। उनके समय में 'धर्म में अकल का दखल नहीं' जैसा विचार व सिद्धान्त काम नहीं करता था जैसा कि आजकल कुछ मतों में होता है। इसी कारण से वेद सर्वकालिक एवं सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ रहे हैं, आज भी हैं तथा प्रलयावस्था तक रहेंगे। जिस प्रकार से आलस्य प्रमाद से हम लोग ज्ञान को विस्मृत कर अज्ञानी हो सकते हैं उसी प्रकार से महाभारत काल के बाद वेद ज्ञान से युक्त आर्यजाति अपने आलस्य प्रमाद से वेद ज्ञान से च्युत व विमुख हो गई। वेदों का स्थान देश-देशान्तर में विषसम्पृक्त अन्न के समान मत-मतान्तरों के ग्रन्थों व उनकी अविद्यायुक्त शिक्षाओं ने ले लिया जिसके निराकरण के लिये ही ऋषि दयानन्द सरस्वती (१८२५-१८८३) ने वेद-मत वा वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना की थी। आज वेद ज्ञान प्रायः पूर्ण रूप में उपलब्ध है। हम ईश्वर को न केवल जान सकते हैं अपितु उसका साक्षात्कार भी कर सकते हैं। वेद के बाद वेदांग ग्रन्थों सहित प्रमुख स्थान पर आर्ष व्याकरण, उपनिषदों व छः दर्शन ग्रन्थों का स्थान है। इसका अध्ययन कुछ ही समय में किया जा सकता है। हिन्दी व अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी उपनिषद् व दर्शनों सहित वेदों के भाष्य व टीकायें भी उपलब्ध हैं। वैदिक विद्वान्

मनुष्य की आत्मा व परमात्मा विषयक किसी भी शंका का समाधान करने के लिये तत्पर हैं। ऐसी स्थिति में संसार में मनुष्यों द्वारा वेदज्ञान की उपेक्षा करना उचित नहीं है। हम अनुमान करते हैं कि विज्ञान की वृद्धि के साथ ही लोग अविद्या, अज्ञान व मिथ्या परम्पराओं से युक्त मान्यताओं व मतों की उपेक्षा कर वेदों की ओर आकर्षित होंगे और अपने जीवन को वैदिक संस्कारों वा ज्ञान से सजाने व संवारने में तत्पर होंगे। हमें लगता है कि ऋषि दयानन्द इस प्रक्रिया को आरम्भ कर गये थे। इस प्रक्रिया की गति वर्तमान में कुछ कम है परन्तु ज्ञान व विज्ञान की वृद्धि के साथ इसमें भी वृद्धि होगी और यूरोप के पक्षपात रहित लोग वेदों का अध्ययन कर ईश्वर व आत्मा के ज्ञान व इनकी प्राप्ति के लिये वेदों को अपनायेंगे व उनकी शिक्षाओं के अनुसार आचरण करेंगे।

ऋषि दयानन्द के सामाजिक जीवन में प्रवेश से पूर्व देश नाना मत-मतान्तरों से ढ़का व पटा हुआ था। सभी मत अविद्या से युक्त विष सम्पृक्त अन्न के समान थे। ईश्वर तथा आत्मा का यथार्थ व पूर्ण सत्यस्वरूप किसी धर्माचार्य व मत-धर्मानुयायी को विदित नहीं था। सभी मध्यकाल के अज्ञानता के समय में स्थापित अपने-अपने मतों के अनुसार अपनी पुस्तकों का अध्ययन करते तथा उनके अनुसार क्रियायें व पूजा अर्चना आदि करते थे। सत्य के अनुसंधान का कहीं कोई प्रयास होता हुआ नहीं दीखता था। देश व विदेश में सर्वत्र अज्ञान व पाखण्ड विद्यमान थे। भारत में मूर्तिपूजा एवं फलित ज्योतिष ने अधिकांश देशवासियों को ईश्वर के सत्यस्वरूप के ज्ञान व सच्ची उपासना सहित पुरुषार्थ से विमुख किया हुआ था। जन्मना-जाति ने समाज को कमजोर व क्षय रोग के समान ग्रसित किया हुआ था और आज भी स्थिति चिन्ताजनक है। छुआछूत का व्यवहार भी हिन्दू समाज में होता था। बाल-विवाह प्रचलित थे जिसमें बच्चों को, जिनका विवाह किया जाता था, विवाह का अर्थ भी पता नहीं होता था। विवाहित बाल कन्यायें विधवा हो जाने पर नरक से भी अधिक दुःखी जीवन व्यतीत करती थीं। यत्र तत्र सती प्रथा भी विद्यमान थी। विधवा विवाह को पाप माना जाता था तथा कोई इसे करने की सोच भी नहीं सकता था।

स्त्रियों व शूद्रों की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं था। वेदों का अध्ययन व श्रवण इन दोनों के लिये वर्जित थे। अंग्रेज देश को ईसाई बनाना चाहते थे। संस्कृत भाषा, जो ईश्वरीय भाषा व देव-विद्वानों की भाषा है, उसे नष्ट करने के षड्यन्त्र जारी थे। ईसाई एवं मुसलमान लोभ, भय तथा छल से हिन्दुओं का मतान्तरण वा धर्मान्तरण करते थे। देश में जो ईसाई व मुस्लिम हैं वह सब विगत १२०० वर्षों में धर्मान्तरण की प्रक्रिया से ही बनाये गये हैं। सर्वश्रेष्ठ वेद की शिक्षाओं की ओर न हिन्दू और न किसी अन्य समुदाय का ध्यान जाता था। सामाजिक प्रथाओं, पर्वों, व्रत, उपवास, गंगा-स्नान, भागवत-कथा व रामचरित मानस के पाठ आदि को मनुष्य जीवन का प्रमुख धर्म व कर्तव्य जाना व माना जाता था। कुछ वर्गों के प्रति पक्षपात व उनका शोषण भी किया जाता था। ऐसी विषम परिस्थितियों में अधिकांश जनता अभाव, रोगों, भूख, आवास की समुचित व्यवस्था से दूर अपना जीवन व्यतीत करने के लिए विवश थी। अंग्रेज देश का शोषण करते थे तथा देशभक्तों पर अत्याचार करते थे। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द का गुजरात के मोरवी नगर तथा इसके टंकारा नामक कस्बे में एक ब्राह्मण कुल में जन्म होता है।

ऋषि दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। १४ वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन उन्हें मूर्तिपूजा के प्रति

अविश्वास व अनास्था हो गयी थी। बहिन व चाचा की मृत्यु ने इनकी आत्मा में वैराग्य के भावों का उदय किया। माता-पिता ने इनकी इच्छानुसार काशी आदि जाकर अध्ययन करने की सुविधा प्रदान नहीं की। विवाह के बन्धन में बाँधने की तैयारी की गई। इस बन्धन में न फंसने की इच्छा से मूलशंकर जो आगे चलकर ऋषि

दयानन्द बने, अपनी आयु के २२वें वर्ष में ईश्वर की खोज में घर से निकल भागे और उन्होंने लगभग १७ वर्षों तक देश के अनेक भागों में धार्मिक विद्वानों तथा योगियों आदि की संगति की तथा लगभग ३ वर्ष तक योगेश्वर कृष्ण की जन्मनगरी मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से अध्ययन कर वेदों की व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य पद्धति तथा निरुक्त पद्धति के विद्वान् बने। गुरु की प्रेरणा से आपने देश की सभी धार्मिक समस्याओं अर्थात् अविद्या, अन्धविश्वास, मिथ्या परम्पराओं तथा सामाजिक बुराईयों को दूर करने सहित समाज सुधार का कार्य किया। देश को स्वतन्त्र करने के लिये भी गुप्त रीति से काम किया। इसके अच्छे परिणाम देखने को मिले। कलकत्ता, मुम्बई, बिहार, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश सहित देश के अनेक भागों में वेद धर्म प्रचारक एवं अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीति निवारक संस्था "आर्यसमाज" की स्थापना हुई और इनके माध्यम से वेद प्रचार, अज्ञान-अन्धविश्वास वा अविद्या निवारण का कार्य आरम्भ हो गया। शिक्षा जगत् को भी ऋषि दयानन्द की महत्वपूर्व देन है। ऋषि दयानन्द वेदाध्ययन की गुरुकुल प्रणाली के प्रणेता थे। उन्हीं के अनुयायियों ने लाहौर में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेज स्थापित कर उसे देश भर में फैलाया और देश से अज्ञान को दूर किया। इसका सुपरिणाम हमारे सामने हैं। देश भर में शिक्षा व ज्ञान की उन्नति हुई, देश स्वतन्त्र हुआ तथा सामाजिक कुरीतियाँ दूर होने सहित अन्धविश्वासों में भी कमी आयी। सभी मतों की पुस्तकों व उनकी व्याख्याओं पर भी ऋषि दयानन्द के उपदेशों व तर्क एवं युक्तियों का प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपनी अविद्यायुक्त बातों को भी तर्कसंगत सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

ऋषि दयानन्द यदि न आते तो सनातन ज्ञान वेद, वेदों पर आधारित वैदिक धर्म तथा संस्कृति जो उनके समय लुप्त प्रायः थे, लुप्त ही रहते। आर्य समाज की अनुपस्थिति में विद्या का प्रचार व प्रसार नहीं होता जो ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी विद्वानों ने अपने मौखिक प्रचार, ग्रन्थों के लेखन व प्रकाशन सहित शास्त्रार्थ एवं शंका-समाधान आदि के द्वारा किया। वैदिक धर्म के विरोधी मत हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर उन्हें अपने मत में बलात् सम्मिलित करते रहते। अन्धविश्वासों व असंगठन सहित सामाजिक कुरीतियों के कारण ऐसा होना असम्भव नहीं था। यह निश्चय है कि आज देश जहाँ पर पहुँचा है और वैदिक तथा सनातनी पौराणिक लोगों की जो स्थिति व दशा है, वह वर्तमान जैसी न होकर वर्तमान से खराब व चिन्ताजनक होती। आज हिन्दुओं की जो जनसंख्या है इससे भी कहीं कम होती। देश आजाद होता या न होता, इस पर भी शंका उत्पन्न होती है। देश को आर्यसमाज द्वारा दिये स्वराज्य सर्वोपरि उत्तम होता का मन्त्र प्राप्त न होता। आर्यसमाज ने देश को जो स्वराज्य व स्वदेशीय शासन सर्वोपरि उत्तम होता है, इस विचारधारा के समर्थक विचारक, नेता, क्रान्तिकारी व आन्दोलनकारी दिए हैं वह न मिलते। इससे स्वतन्त्रता आन्दोलन में निश्चय ही शिथिलता होती और उसका प्रभाव देश की आजादी की प्राप्ति पर होता। एक साधारण परिवार में जन्म लेकर आज हम आर्यसमाज के कारण वेद, उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान रखते हैं। हमने ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, वेदभाष्य सहित उनके अनेक जीवन चरित्रों एवं आर्य विद्वानों की सैकड़ों पुस्तकों को पढ़ा है। ऋषि दयानन्द के न आने पर न वह पुस्तकें होती, न वेद और उपनिषद् व दर्शन आदि ग्रन्थों पर भाष्य व टीकायें होती, तो उनका अध्ययन भी निश्चय ही असम्भव था। यह सब ऋषि दयानन्द जी की कृपा से सम्भव हुआ। हम आज जो भी हैं उसमें हम वेद व वैदिक साहित्य से परिचित हैं। इन्हीं से हमारा व्यक्तित्व बना है। हम व प्रायः सभी ऋषिभक्त ईश्वर व आत्मा के सत्यस्वरूप को जानते हैं। सन्ध्या, यज्ञ एवं उपासना आदि भी करते हैं। समाज हित व देश हित के कार्यों में भी भाग लेते व इन कार्यों को करने वालों का सहयोग व समर्थन करते हैं तथा देश विरोधी तत्वों के प्रति उपेक्षा एवं विरोध के भाव रखते हैं। हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज सहित आर्य विद्वानों के ग्रन्थों से विशेष अनुग्रहित एवं लाभान्वित हैं। उनका आभार मानते हैं।

-मनमोहन कुमार आर्य
पता- १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ९४१२९८५१२१

विश्वशान्ति की समस्या और उसका स्थायी समाधान एक रचनात्मक पुरोगम

महर्षि जैमिनी के पश्चात् ऋषि-परम्परा में स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रथम महापुरुष हैं, जिन्होंने शाश्वत सनातन तथा सार्वभौम मानवधर्म की दुहाई ही नहीं दी अपितु उसके लोप होने के परिणामस्वरूप उत्पन्न संसार के समस्त मत, पन्थ तथा सम्प्रदायों की विधिवत समीक्षा की (सत्यार्थ प्रकाश, ११वें समुल्लास से १४वें समुल्लास तक)।

वे स्वयं 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में लिखते हैं-

'ब्रह्मा से लेकर जैमिनिमुनि पर्य्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं, जिनको कि मैं भी मानता हूँ, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ।

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना, मनवाना, और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उसका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूँ, क्योंकि ऐसा करना मनुष्यधर्म से बहिः है।'

इस कथन से उनके हृदय में विश्व शान्ति के लिए एक ठोस रचनात्मक पुरोगम की स्पष्ट आभा मिलती है।

अशान्ति क्यों?

संसार में अशान्ति के दो ही मौलिक हेतु हो सकते हैं। प्रथम, भोग सामग्री की वितरण व्यवस्था और द्वितीय, भोक्ता का भोग के साथ सम्बन्ध। प्रथम स्थिति का समाधान सामाजिक क्रान्ति तथा राजनैतिक उथल-पुथल से होता रहता है। द्वितीय के लिए स्थान, समय तथा परिस्थिति के आधार पर पुरुष विशेष द्वारा उपस्थित विचार तथा विधि कार्य करते हैं। पहले के विस्तार स्वरूप राजतंत्र से लेकर लोकतंत्र तक की व्यवस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ और दूसरे के विस्तार स्वरूप मत, ग्रन्थ तथा सम्प्रदाय के रूप में पारसी, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन इत्यादि आचार पद्धतियों का प्रादुर्भाव हुआ। (जिन्दावस्ता, बाइबिल, कुरान, धम्मपद, त्रिपिटक)। इन्हीं दोनों पाटों के बीच विश्व की शान्ति पिसती रही और आज अपने शिखर पर पहुँच चुकी है। विश्व में अशान्ति के मूलकारणों में दो प्रमुख हैं। पहला- राजनीतिक मान्यताओं की रस्सा-कसी और दूसरा, मत-मतांतरों की संख्या वृद्धि में होड़ की प्रवृत्ति। विश्व के इतिहास में जारशाही और उसका दुःखद अन्त एक ओर है, तो ईसाई मत की ही दो शाखाओं, कैथलिक और प्रोटेस्टेण्ट के मध्य की रक्त-रंजित वीभत्स गाथायें दूसरी ओर हैं। इस प्रकार जब दोनों स्वरूप में विद्यम और की स्थिति अत्यन्त भयावह और विनाशकारी-स्वरूप में विद्यमान थीं, तब इस धराधाम पर बाल

ब्रह्मचारी, युगपुरुष, क्रान्ति दृष्टा भगवान दयानन्द का प्रादुर्भाव आर्यावर्त्त की पवित्र ऋषि भूमि में सम्पूर्ण अविद्या तथा अज्ञान का नाश करके विश्व शान्ति स्थापनार्थ उन्नीसवीं सदी के मध्य में हुआ।

महर्षि दयानन्द दया का या सागर,
जगत की व्यथा की दवा बन के आया।
तिमर छा रहा था अविद्या का भूपर,
गगन में दिवाकर नया बनके आया।।

महर्षि ने इस व्यापक अविद्या, अज्ञान तथा सत्य का भेद न करते हुए सिंहनाद किया, 'मेरा अपना मन्तव्य वही है जो सब को तीन काल में एक सा मानने योग्य है। मेरी कोई अपनी नवीन कल्पना नहीं है, अपितु जो सत्य है उसे मानना और मनवाना और जो असत्य है उसे छोड़ना और छुड़वाना अपना अभीष्ट है।' इसी सत्य प्रकाशन के सन्दर्भ में उन्होंने विश्व के समस्त नागरिकों के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक जयघोष दिया 'अपने देश में अपना राज्य।' इस प्रकार संसार के समस्त पराधीन राष्ट्रों को एक नूतन चेतना तथा स्फूर्ति इस दिशा में प्राप्त हुई और अपने देश के साथ ही अन्य पराधीन राष्ट्र भी स्वाधीनता के लिए खड़े हो गये। परिणामस्वरूप अनेकों ने वर्षों की दासता से मुक्ति पाई और आज भी अनेक इस दिशा में संघर्षरत हैं। यह सब भगवान् दयानन्द के एक मंत्र का चमत्कार है।

उर्दू के कवि ने ठीक ही कहा है-

तू नहीं, पैगाम तेरा हर किसी के दिल में है।
जल रही अब तक शमा, रोशनी महफिल में है।

संसार के श्रेष्ठ पुरुष एक हों

महर्षि ने इस दिशा में स्थायित्व लाने के निमित्त एक आन्दोलन का भी सूत्रपात किया, वह था संसार के श्रेष्ठ पुरुषों का संसार के लिए एक वेदी पर उपस्थित होना। इस आन्दोलन को निरन्तर चालू रखने के लिए संगठन का गठन भी किया जिसे आर्यसमाज अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन "Society of the noble men" कहते हैं। महर्षि ने इस आन्दोलन के तीन चरण निश्चित किये-

१. एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक विश्व 'One God, one religion and one world' अनेक महापुरुषों ने इस दिशा में अपनी योग्यता तथा क्षमता के अनुसार कार्य किया किन्तु इस मौलिक त्रिसूत्र के अभाव में उनके सम्पूर्ण प्रयास विफल रहे। उदाहरण स्वरूप, मार्क्स का सर्वहारा दर्शन तथा गाँधी जी का सर्वोदय। यहाँ एक ईश्वर से तात्पर्य एक प्राप्तव्य- "One distinction and one God" से है। एक धर्म से अभिप्राय एक आचरण संहिता से है और एक विश्व से अर्थ एक परिवार से है। जिस प्रकार से एक परिवार में रहने वालों का एक आदर्श, इसकी प्राप्ति का एक माध्यम अर्थात् सभी साधकों के साधन तथा साध्य का सामंजस्य। महर्षि ने इसके लिए तर्क युक्ति, प्रमाण तथा प्रयोग के आधार पर संसार के प्रमुखतम आचार्यों से वार्ता की और अपेक्षित प्रयास भी किया। उनके शब्दों में विश्व की अशान्ति का मूल कारण इस प्रकार के भेदों के माध्यम से उत्पन्न होने वाला घृणा और द्वेष का वातावरण ही है। 'यद्यपि प्रत्येक मत, पन्थ तथा सम्प्रदाय में कुछ-कुछ अच्छी बातें हैं तथापि आचार्यों में परस्पर मतभेद होने के कारण अनुयायियों में मतभेद कई गुणा बढ़कर घृणा और द्वेष की उत्पत्ति करता है। क्या ही अच्छा होता कि सभी आचार्य प्रवर एक स्थल पर बैठ कर मनुष्यमात्र के लिए सर्वतन्त्र, सार्वभौम तथा सनातन नियमों का संकलन कर पाते, जिससे मानव समाज घृणा और द्वेष से मुक्त होकर श्रद्धा और स्नेह की पवित्र स्थिति को प्राप्त होता।' उन्होंने चांदपुर (उत्तर

प्रदेश) में एक धर्म मेला के अन्दर इस प्रकार के विचार-विमर्श की व्यवस्था भी की। उसमें पादरी, मौलाना, पण्डित सभी उपस्थित थे। महर्षि ने तर्क, युक्ति, प्रमाण और प्रयोग से उन को सहमत न होते देख अन्ततोगत्वा एक अद्वितीय विधि उपस्थित की। सब अपने-अपने मत के श्रेष्ठ विचार पृथक्-पृथक् पत्रों पर लिखें। पुनः सब को एक साथ एकत्रित किया जाये और जो-जो विचार तथा आचार उपस्थित हों, उनमें से सर्वमान्य विचार-आचार एक स्थल पर संकलित कर लिये जायें और हम सब उन पर हस्ताक्षर कर देवें, जिससे यह आचरण संहिता संसार के सभी मनुष्यों के लिए मान्य, व्यावहारिक तथा उपयोगी घोषित हो जाये और इस प्रकार परस्पर विभिन्न मतमतान्तरों के आधार पर विभाजित मानव समाज एकता के सूत्र में बंध कर विश्व में शान्ति स्थापित कर सकें।

उपस्थित किसी भी प्रतिनिधि (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा ब्राह्म समाज) ने इसका स्वागत अपने क्षुद्र स्वार्थ तथा नेतागीरी के कारण नहीं किया।

मौलिक समाधान

महर्षि भौतिक जगत् में भी अर्थ के दूषित वितरण के परिणाम का समाधान बताते हैं जो आज की समस्या का एकमात्र हल है। आज मजदूर जहाँ एक ओर कम से कम काम करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर अधिक से अधिक वेतन चाहता है और इसी प्रकार महाजन जहाँ एक ओर अधिक से अधिक काम लेना चाहता है वहीं दूसरी ओर कम से कम वेतन देना चाहता है। तात्कालिक समाधान के रूप में इस विषम मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही मजदूर यूनियन, कर्मचारी संघ तथा मर्चेन्ट एसोसिएशन का विश्व में जाल बिछा दीखता है। समाधान तो ऋषि इसे पूर्णतया उलट देने में मानते हैं। अर्थ क्या हुआ? मजदूर अधिक से अधिक काम करें और कम से कम वेतन लेने की इच्छा रखें और महाजन कम से कम काम लेकर मजदूरों को अधिक से अधिक देने की कामना करे। विश्व-शान्ति के लिए व्यक्ति को कम से कम समाज से लेना होगा और अधिक से अधिक समाज को देना होगा, तभी वर्तमान अशान्ति, अनिश्चितता तथा अराजकता का अन्त होगा अन्यथा कदापि नहीं। मुझे कहने दीजिये आज हमें भोग में होटल की प्रवृत्ति से हट कर परिवार में पाकशाला प्रवृत्ति में आना होगा। हम जब होटल में भोजन करते हैं तो कम से कम होटल वाले को देकर अधिक से अधिक खा लेना चाहते हैं। किन्तु जब हम परिवार में भोजन करते हैं तो कम से कम खाकर अधिक से अधिक परिवार के अन्य सदस्यों के लिए छोड़ना चाहते हैं। ऐसा मन कब बनेगा? जब तन के निखार के निमित्त दर्पण की भाँति हमें मन के सुधार के लिए दर्शन मिलेगा। यह दर्शन जिस आचरण संहिता में उपलब्ध है, वह परमात्मा द्वारा प्रदत्त अपनी प्रजा के निमित्त विधि-निषेधात्मक वेद ज्ञान है, जो सम्पूर्ण सृष्टि की अवधि के भीतर (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष) उपस्थित विश्व के सभी श्रेष्ठतम उपभोक्ताओं मनुष्यमात्र के लिए समान रूप से सुखदायक तथा उपयोगी है। उससे हम न्यूनतम परिश्रम द्वारा अधिकतम सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। इसे उपभोग के नियम लागत या कवायद 'Laws of Consumption' कहते हैं। इसके अनुकूल चलकर हम शाश्वत सुख, आनन्द, मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। जो मानवमात्र का एकमात्र अभीष्ट लक्ष्य है। **क्रमशः.....**

उच्च रक्तदाब (Hypertension)

वर्तमान समय में उच्च रक्तदाब एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या है। हमारे देश में यह एक आम रोग हो गया है। ३० वर्ष की उम्र के पश्चात् लगभग १० से २० प्रतिशत मनुष्य इसके शिकार हो जाते हैं। उच्च रक्तदाब से मनुष्य के मस्तिष्क, हृदय, आँख, गुर्दे एवं शरीर की प्रमुख धमनियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लगभग ६०% व्यक्तियों को इस रोग की विद्यमानता का पता ही नहीं लगता क्योंकि वर्षों तक यह रोग बिना लक्षणों के शरीर में हो सकता है। इसका पता तब लगता है जब रोगी किसी अन्य रोग की जाँच के लिए चिकित्सक के पास जाता है। सिर में दर्द, चक्कर आना, नाक से नकसीर फूटना, बेहोशी, आँखों में धुँधलापन, छाती में दर्द, श्वास लेने में परेशानी, धड़कन एवं कानों में सांय-सांय आवाज आदि इस रोग की चेतावनी देने वाले लक्षण हैं।

सामान्य रक्तदाब

स्वस्थ व्यक्ति में सिस्टोलिक बी.पी. १०० से १५० एवं डायस्टोलिक बी.पी. ६० से ६० सामान्य माना जाता है।

उच्च रक्तदाब के कारण

हृदय की अपर्याप्त कार्य कुशलता, गुर्दों की विफलता, अधिक मात्रा में चिकनाई युक्त तले हुए पदार्थों का सेवन, चीनी मिठाई आदि का अति प्रयोग, मोटापा, अधिक शराब एवं तम्बाकू का सेवन, अधिक नमक एवं तेज मिर्च मसालों का सेवन, ज्यादा दिमागी तनाव, चिन्ता, भय, व्याकुलता, आनुवांशिकता आदि इस व्याधि के प्रवर्तक कारण माने जाते हैं।

लक्षण

उच्च रक्तचाप के रोगी में प्रायः सिर दर्द की समस्या पाई जाती है। सिर में भारीपन व सिर को आगे झुकाने पर कष्ट बढ़ता है। कभी-कभी आँखों के आसपास सूजन हो सकती है। चक्कर आना, नींद कम आना, बेचैनी व घबराहट हो सकती है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, गुस्सा जल्दी आता है। सहनशक्ति में कमी आ जाती है। उच्च रक्तदाब के कारण गुर्दे की विकृति होने से चेहरे, हाथ, पैरों या पूरे शरीर पर सूजन आ सकती है। थोड़े से परिश्रम से ही रोगी को थकावट हो जाती है। किसी भी कार्य में एकाग्रता का अभाव व याददास्त की कमी हो जाती है। उच्च रक्तदाब के रोगियों में से किसी को कुछ लक्षण मिलते हैं तो अन्य में किसी अन्य प्रकार के लक्षण होते हैं। कुछ रोगी ऐसे भी मिलते हैं जिनमें हाई ब्लड प्रेशर के कोई चिह्न नहीं होते।

चिकित्सा

उच्च रक्तदाब में योग- उच्च रक्तदाब में प्राणायाम एवं योगासन से बहुत लाभ होते देखा गया है। लगातार नियमित योग को जीवन का एक अंग बनाने वाले व्यक्ति का बी.पी. हमेशा व्यवस्थित रहता है। योग हमेशा प्रसन्नचित मन से खुली हवा में करें। योग सुबह खाली पेट व शाम को खाने के ५-६ घण्टे बाद करें। यदि किसी व्यक्ति की बी.पी. की दवा चल रही हो तो उसे वह

दवा अपने डॉक्टर की सलाह के बिना बन्द नहीं करनी चाहिए। योग और आगे बताये जाने वाले प्रयोगों के साथ-साथ ऐलोपैथी दवा भी लेते रहें। जैसे-जैसे उच्च रक्तदाब नियन्त्रित होने लगे वैसे-वैसे एलोपैथी दवा अपने डॉ. की सलाह से कम करते हुए बन्द कर सकते हैं।

योग करते समय पहले २ मिनट भस्त्रिका करें। इससे शरीर को आवश्यकतानुसार शुद्ध वायु मिलेगी। इसके बाद ५ मिनट अनुलोम-विलोम व ५ मिनट कपालभाति आराम से करें। इसके पश्चात् भस्त्रिका ३ बार करें। अब उड्यानबन्ध आराम से लगावें। इसके पश्चात् ५ मिनट आराम करने के पश्चात् १५ मिनट योगासन करें। योगासनों में मकरासन, शलभासन, पवन मुक्तासन, कटि उत्तनासन, मर्कटासन, पश्चिमोत्तानासन, जानु शिरासन व ताडासन करें। अब पाँच मिनट आराम करें। उज्जाई प्राणायाम और सिंहासन करने के बाद ५ मिनट शवासन करें।

उच्च रक्तदाब से बचाने वाले प्रयोग

१. मेथीदाना का बारीक पाउडर बना लें । ३ ग्राम मेथीदाना पाउडर सुबह खाली पेट जल के साथ सेवन करें।

२. तरबूज एवं खस-खस के बीजों को बारीक पीस लें। एक-एक चम्मच पाउडर प्रातः नास्ते के १५ मिनट बाद एवं शाम को छः बजे जल से लेवें।

३. हमेशा दक्षिण दिशा में सिर करके सोवें। उत्तर-पूर्वी स्थान को साफ सुथरा रखें।

४. रात को सोते समय पैर के तलुओं पर सरसों के तैल एवं पानी से मालिश करें।

५. भोजन करते समय प्याज का सेवन करें। प्याज में रक्तदाब को कम करने वाले तत्व होते हैं। प्याज के रस और शहद को बराबर मात्रा में सेवन करना भी लाभप्रद है।

६. सोते समय बादाम रोगन की ३-३ बूँद दोनों नथुनो में डालें।

७. सुबह नास्ता करने से १५ मिनट पहले ४ तुलसी की पुत्तियाँ एवं २ नीम की पत्तियाँ खाने से उच्च रक्तदाब में अच्छा लाभ होता है।

८. लहसुन की खीर

एक कप पानी एवं एक कप गाय के दूध में लगभग १० ग्राम लहसुन की कलियाँ छीलकर मिला लें। अब इस द्रव को एक कप शेष रहने तक उबालें। लहसुन को चबाकर खा लेवें व ऊपर से दूध पीवें। यह प्रयोग रोज रात को सोते समय करें। चाहें तो दिन में दो बार भी इस खीर को खा सकते हैं। इस योग से अच्छा लाभ होते देखा गया है।

९. अर्जुन की छाल की चाय

एक छोटा चम्मच अर्जुनछाल के पाउडर को एक कप पानी और एक कप दूध के साथ गर्म करें। जब सारा पानी जल जाये एवं एक कप दूध शेष रह जाये तो इसे गर्म-गर्म चाय की तरह पीवें । रक्तचाप एवं हृदय रोगियों के लिए यह चाय अमृत के समान है।

१०. लौकी का सूप – २५० ग्राम ताजा हरी लौकी को काटकर ५०० ग्राम पानी में प्रेसर कूकर में एक सीटी आने तक गर्म करें। इसके पश्चात् लौकी के काढ़े को मसलकर छान कर बिना कुछ मिलाये सूप की तरह गर्म-गर्म पीवें। यह प्रयोग सप्ताह में ४-५ बार करें।

इसके अतिरिक्त उच्च रक्तदाब को उत्पन्न करने वाले कारणों का परित्याग करें। अपना वजन सामान्य रखें। नित्य टहलने जायें। खाने में संयम रखें, नमक व चिकनाई का सेवन कम करें, मादक द्रव्यों का सेवन बिल्कुल न करें।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी
आयुर्वेद विभाग,राजस्थान

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

कर्णवास के पण्डित नन्दकिशोर जो अध्यापक थे, एक दिन स्वामी जी के डेरे पर आते समय एक खेत से सेम की फलियाँ तोड़ते लाये ताकि स्वामी जी को भेंट कर सकें। अकस्मात् स्वामी जी ने पूछ लिया कि आप ये फलियाँ चोरी करके लाये हैं तो नन्दकिशोर जी को आश्चर्य हुआ कि उन्होंने चोरी कहाँ की? जब श्री महाराज ने उनसे कहा कि उन्होंने खेत के मालिक से अनुमति लिए बिना ये फलियाँ तोड़ी थीं तब उन्हें अहसास हुआ कि यह चोरी थी। यह सूक्ष्म ज्ञान तो उन्हें मिला परन्तु वे इस बात से आश्चर्यचकित रहे कि यह बात कि उन्होंने बिना स्वामी की आज्ञा के फली तोड़ी थीं, यह श्री महाराज को कैसे ज्ञात हुयी?

एक दिन गंगा किनारे श्री महाराज केवल लंगोटी पहिने साधना में तल्लीन थे तभी बंदायूँ के कलेक्टर और उनका पादरी मित्र वहाँ आ पहुँचे। भयंकर शीत के समय स्वामी जी नंगे बदन आनन्द पूर्वक समाधिस्थ थे। यह देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने ठण्ड न लगने का कारण स्वामी जी से पूछा तो स्वामी जी ने कहा यह अभ्यास के कारण है। आप भी इस समय मुख ढके हुए नहीं हैं पर इससे आपको कोई फरक नहीं पड़ रहा है उसी प्रकार मुझे भी अभ्यास होने से शीत का असर नहीं हो रहा है।

जब स्वामी दयानन्द सोरों विराज रहे थे तब स्थानीय स्तर पर विख्यात लोग उनके सम्पर्क में आये। यहाँ चक्रांकित सम्प्रदाय का जोर था। अनेक लोग महाराज के शत्रु भी बन गए परन्तु अन्त में अनेकों ने सच स्वीकार किया। इनमें बलदेव गिरी, पण्डित अंगद शास्त्री, पण्डित अयोध्या प्रसाद , पण्डित सुखानन्द आदि का नाम लिया जा सकता है। अंगद शास्त्री ने तो अपनी शालिग्राम की मूर्ति भी गंगा में विसर्जित कर दी। कैलाश पर्वत भी चाहे स्वार्थ के कारण अपने वराह मन्दिर से चिपके रहे परन्तु वे स्वामी जी के प्रशंसक अवश्य रहे।

पाठक गण! महर्षि जीवन यात्रा में उनके प्राणों पर असंख्य बार आक्रमण किये गए उनमें से केवल कुछ ही प्रसिद्ध हो पाए। हमें लगता है कि शायद ही महर्षि का कोई प्रवास ऐसा हो जो उनके लिए पूर्णरूपेण निरापद रहा हो।

यहाँ सोरों में भी उनके प्राणों को हरण की चेष्टा की गयी। एक बार दयानन्द के धोखे में वहाँ सो रहे एक अन्य साधू को कुछ गुण्डों ने गंगा में फेंक दिया, जब वह चिल्लाया तो उन्हें अपनी भूल का पता चला, परन्तु वे दुबारा साहस न कर सके।

एक अन्य घटना में जब स्वामी जी उपदेश कर रहे थे तब एक जाट एक मोटी लाठी लेकर वहाँ आ गया और ऊल जलूल बकने लगा। 'तू हमारे भगवानों की निन्दा करता है, मूर्तिपूजा के लिए मना करता है, गंगा मैया की निन्दा करता है, आज मैं सारा किस्सा खत्म कर देता हूँ। बता यह लट्ठ तुझे कहाँ मारूँ।' स्वामी जी ने ऐसी दयापूर्ण दृष्टि से उसे देखा और कहा मैं जो विचार व्यक्त करता हूँ उसका अगर किसी को दोष दिया जाय तो यह मेरा मस्तिष्क है, यह अपना लट्ठ यहीं मार। स्वामी जी का इतना कहना था और उस उद्दण्ड जाट जी की नजरें जैसे ही स्वामी जी से मिलीं त्योंही उसका हिंस्र भाव उड़नछू हो गया और वह श्रीमहाराज के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगा। दया के अवतार दयानन्द ने उसे सान्त्वना देकर विदा कर दिया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

समाचार

नवसंवत्सर एवं आर्य समाज के १५०वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम

अजमेर के आदर्शनगर स्थित गाँधी भवन पार्क में नवसंवत्सर व आर्य समाज के १५०वें स्थापना दिवस पर ६ अप्रैल २०२४ को वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अजमेर दक्षिण की

विधायक अनिता भदेल ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन और समाज में उनके द्वारा किए गए योगदान पर उद्बोधन देकर युवाओं से उनके आदर्शों को अपनाने का आह्वान किया। सैंकड़ों लोगों की मौजूदगी में आयोजित गरिमापूर्ण आयोजन में आचार्य शक्तिनन्दन जी ने यज्ञ के मंत्रों का सरल भाषा में भावार्थ बताकर उपस्थित आर्यजनों से दैनिक यज्ञकर्म करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में राजकीय उच्च माध्यमिक अंध विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा हवन तथा रा.बा.उ.मा.वि. आदर्शनगर की छात्राओं द्वारा कविता पाठ किया गया। इस मौके पर पार्षद देवेन्द्र सिंह शेखावत, आर्य समाज आदर्शनगर की अध्यक्ष सुशीला देवी शर्मा, रामस्वरूप आचार्य सहित कई अन्य पदाधिकारी व क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

– चन्द्रप्रभा सैनी

गार्गी आर्य महिला समाज की मासिक बैठक सम्पन्न

गार्गी आर्य महिला समाज, उदयपुर की अप्रैल माह की मासिक बैठक दिनांक २८ अप्रैल २०२४ को सफलता के साथ सम्पन्न हुयी। इस कार्यक्रम को यज्ञ के साथ प्रारम्भ किया गया जिसे श्रीमती सरला जी गुप्ता द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्रीमती राधा त्रिवेदी एवं सुश्री आयुषी

यादव ने ईश्वर भक्ति के भजनों से सबका मन मोह लिया। स्वागत प्रवचन श्रीमती भारती आर्या द्वारा दिया गया। इस बैठक में गार्गी आर्य समाज से जुड़ी महिलाओं ने नाम परिचय नामक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया एवं रामनवमी और हनुमान जयन्ती के उपलक्ष्य पर चर्चा की। मंच का सफल संचालन सुश्री भाग्यश्री शर्मा द्वारा किया गया।

– श्रीमती सरला गुप्ता

आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा दि. २६ अप्रैल से ५ मई २०२४ तक आदर्श जीवन निर्माण शिविर संन्यास आश्रम विले पार्ले पश्चिम मुम्बई में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें बच्चों को नैतिक शिक्षा, संध्या (ब्रह्मयज्ञ), भारतीय संस्कृति, संस्कार, मातृ-पितृ भक्ति, देशभक्ति अनुशासित जीवन जीने

की कला, योग, आसन, प्राणायाम, जूड़ो-कराटे, गन ट्रेनिंग, आर्चरी, स्केटिंग, डम्बल, तलवार, संस्कृत मंत्र उच्चारण इत्यादि मुख्य शिक्षक- श्री जीतेन्द्र आर्य, अजमेर राजस्थान और मुम्बई के शिक्षक श्री मनोज आर्य, श्री सौरभ सिंह, श्री विशाल आर्य, अखिलेश आर्य, श्री अरूण आर्य जी ने सभी शिवरार्थियों को सिखाया।

इस अवसर पर श्री भूपेश गुप्ता जी महामंत्री आर्य समाज मुलुंड कॉलोनी को आर्यवीर गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री वेद प्रकाश गर्ग, महामंत्री श्री महेश वेलानी, आर्य समाज वसई के श्री ओम प्रकाश जी शुक्ला, अधिष्ठाता श्री सुभाष सिंह वसई, महामंत्री आदरणीय श्री विजय गौतम, आर्य समाज मुलुंड कॉलोनी के प्रधान वीरेन्द्र साहनी जी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के आशीर्वाद से यह कार्यक्रम बहुत सुन्दर तरीके से सम्पूर्ण हुआ। आदरणीय श्री धर्मधर जी ने सभी का धन्यवाद किया।

– नरेन्द्र शास्त्री, संचालक आर्यवीर दल-मुम्बई

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २०२२ के पुरस्कार घोषित

-निम्न प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया-

प्रथम- श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर(राज.)
(पुरस्कार राशि-5100 तथा 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि एवं प्रमाण पत्र)

द्वितीय- श्री गोपाल राव; सतखण्डा, निम्बाहेड़ा (राज.)
(पुरस्कार राशि 1100 तथा प्रमाण पत्र)

तृतीय- श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब)
(पुरस्कार राशि 700 तथा प्रमाण पत्र)

चतुर्थ- श्री ब्रह्मदेव आर्य; शेखपुरा (बिहार)
(पुरस्कार राशि 500 तथा प्रमाण पत्र)

सभी विजेताओं को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

आचार्य श्रोत्रिय जी का निधन अपूरणीय क्षति

वैदिक शास्त्रों के और आर्ष विद्या के प्रकाण्ड पण्डित, उद्भट विद्वान्, मंत्र मुग्ध कर देने वाली वक्तृत्व कला के धनी आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय अब हमारे मध्य नहीं रहे। इस बात को स्वीकार कर पाना भी अत्यन्त कठिन जान पड़ता है।

शब्दों का नितान्त अभाव है कि उनकी विद्वता और वक्तृत्व को व्यक्त करने वाली सम्मोहिनी वाणी को लेखबद्ध किया जा सके। जब लय और ताल पर नृत्य करते उनके शब्द समूह वाक्य में परिवर्तित होकर शब्दार्थ सम्बन्ध के साथ श्रोता के कानों तक पहुँचते थे तो वह मंत्र मुग्ध हो जाता था। जब वैदिक ऋचाओं के रहस्य को वे खोलते थे तो पूर्णतः एकाग्रचित होकर के उनको सुनने वाला ही अमृत के घूंट का पान कर पाता था, थोड़ा सा भी इधर-उधर होने वाला व्यक्ति उससे वंचित रह जाता था।

आचार्य जी की सबसे बड़ी विशेषता ऋषि के प्रति अनन्य श्रद्धा और भक्ति का भाव था। जिसकी कमी अन्यत्र दृष्टिगोचर होती है। आर्य जगत् में बहुत कम विद्वान् ऐसे हैं जिन्होंने ऋषि के एक-एक वाक्य की रक्षा के लिए न केवल अपने आप को झोंक दिया था वरन् इस क्रम में अनेकों की नाराजगी और आर्थिक नुकसान भी उठाया, परन्तु वे पीछे नहीं हटे। ऐसे विद्वानों में भाई वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय का स्थान अग्रणी था। आधी शताब्दी के लगभग उनसे जो प्रगाढ़ सम्बन्ध रहा, उस मध्य में अनेक शास्त्रीय चर्चाएँ जब उनसे होती थीं तो कई बार आश्चर्य होता था कि शास्त्र किस सरलता के साथ उनके समक्ष उपस्थित होता था। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों में शायद ही कोई ऐसा अवसर होगा कि मंच पर आप अनुपस्थित रहे होंगे। वस्तुतः तो समस्त कार्यक्रमों को छोड़कर के सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव उनकी वरीयता में रहता था। केवल और केवल हमारे प्रति स्नेह के कारण अत्यन्त गम्भीर रूप से बीमार होने के पश्चात् भी और हमारे विनम्रता पूर्वक निषेध करने के पश्चात् भी वे NMCC UDAIPUR के २६ फरवरी २०२३ को हुए लोकार्पण कार्यक्रम में पधारे और अत्यन्त भावुक वक्तव्य भी दिया।

आचार्य जी के साथ सम्बन्ध परिवार के सदस्य जैसा ही था उसे मित्रवत् भी कह सकते हैं और इस बात का हमें सदैव गर्व रहेगा कि वैदिक विधाओं के धनी आचार्य ने हमें मित्रवत् स्वीकार किया। परन्तु अब उस सम्मोहिनी वाणी का अभाव सदैव खटकता रहेगा। एक महीने पूर्व ही तो टेलीफोन पर कहा था कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ और शास्त्रीय चर्चा मुझसे करने में आप संकोच न करें। परन्तु अब ये शास्त्रीय चर्चाएँ और आर्य समाज के वर्तमान के ऊपर उमड़-घुमड़ रही काली घटाओं को दूर करने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श खुले मन से किसके साथ होगा हमें पता नहीं।

'भैया! जरा सम्भालना' ऐसा अब कोई नहीं कहेगा। एक अजीब सी रिक्तता और विषाद से मन भर गया है।

परन्तु 'जाना ही होगा' यह विधाता का अटल नियम है। उसकी इस व्यवस्था को वही जानता है। अतः नतमस्तक होने के अलावा हमारे पास अन्य रास्ता भी नहीं है। यही स्थिति यही मनः स्थिति उनके पुत्र-पुत्री और सहधर्मिणी की हमने अन्त्येष्टि संस्कार के समय देखी थी।

प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिवार के सभी सदस्यों को इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सत्यार्थ सौरभ के मार्गदर्शक आचार्य श्री को अपनी ओर से और श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश, उदयपुर के सभी न्यासियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

- अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

धर्म विषयक व्याख्यान माला सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर में ५ मई,२०२४ को 'धर्म' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। सुख का मूल ,सत्य नियम सिद्धांत मर्यादा का पालन करना धर्म है, यह विचार भिवानी हरियाणा से पधारे आचार्य भूपसिंह जी ने व्यक्त किया। धर्म विषयक व्याख्यान देते हुए आपने आगे कहा कि नियम और सिद्धान्त, कर्तव्य, मूल स्वभाव दुनिया में एक जैसा है तो सब मनुष्यों का धर्म एक ही है और

वह है मानव,जीव मात्र का कल्याण करना। आपने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि धर्म ग्रन्थों में धर्म की इतनी स्पष्ट परिभाषा पढ़ते-सुनते हुए भी, विज्ञान की अभूतपूर्व उन्नति के बाद भी आज दुनिया में ढ़ोंग-पाखण्ड-अंधविश्वास अधिक बढ़ रहे हैं। धर्म के नाम पर संघर्षों में हुआ जानमाल का नुकसान प्राकृतिक आपदा महामारी और युद्धों में हुये जानमाल के मुकाबले कहीं ज्यादा है। अतः हम धर्म को सही रूप में जाने और सही रूप में माने।

इस अवसर पर स्वामी अग्निव्रत नैष्ठिक का सान्निध्य एवं डॉ. अमृत लाल तापड़िया, भँवर लाल आर्य, डॉ. वेदमित्र आर्य, कृष्ण कुमार सोनी, अम्बालाल सनाढ्य, संजय शाण्डिल्य, रमेशचन्द्र जायसवाल, हरियाणा से पधारे डॉ. शिवलाल शास्त्री, कर्नल पूर्ण सिंह, विशाल आर्य, अजीत सिंह, सोमवीर जी, अनिल जी आदि की सार्थक उपस्थिति रही।

इससे पूर्व श्रीमती सरला गुप्ता के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमती प्रिती चौहान, डॉ. शारदा गुप्ता, श्रीमती उगन्ता यादव, सुभाष कोठारी, आनन्दराज माथुर आदि ने यजमान बन कर आहुतियाँ दीं। कार्यक्रम का संचालन मंत्री वेदमित्र आर्य ने किया।

- रामदयाल मेहरा; प्रचार मंत्री

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

तीनों अर्थात् विद्यासभा, धर्मसभा और राजसभाओं में मूर्खों को कभी भरती न करें, किन्तु सदा विद्वान् और धार्मिक पुरुषों का स्थापन करे।

- सत्यार्थ प्रकाश; षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १४४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर